

UP Board Class 12 Hindi General 2026 (Set 302 BH) Question Paper with Solutions



General Instructions

- (i) This booklet contains 14 questions, each provided with a complete, step-by-step solution.
- (ii) It has multiple-choice questions as well as questions that need a written answer.
- (iii) Attempt each question on your own before reviewing the given solution.

1(a). 'उदंत मार्तण्ड' का प्रकाशन वर्ष है

- (A) 1832
- (B) 1836
- (C) 1826
- (D) 1831

Correct Answer: (C) 1826

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

'उदंत मार्तण्ड' हिन्दी का पहला समाचार-पत्र माना जाता है। इसे पं. जुगल किशोर शुक्ल ने कलकत्ता से साप्ताहिक रूप में निकाला था। इसका पहला अंक 30 मई 1826 को छपा। इसी कारण 30 मई को हिन्दी पत्रकारिता दिवस मनाया जाता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) 1832 - गलत। तब तक यह पत्र बंद हो चुका था।
- (B) 1836 - गलत। यह वर्ष इसके प्रकाशन से बहुत बाद का है।
- (C) 1826 - सही। पत्र का प्रकाशन इसी वर्ष शुरू हुआ।

(D) 1831 - गलत। आर्थिक कठिनाइयों के कारण यह पत्र दिसम्बर 1827 में बंद हो गया था।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (C) 1826 है।

1(b). 'सेवा सदन' के लेखक हैं

- (A) चतुरसेन शास्त्री
- (B) प्रेमचंद
- (C) विश्वभरनाथ शर्मा
- (D) जयशंकर प्रसाद

Correct Answer: (B) प्रेमचंद

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

‘सेवा सदन’ हिन्दी का सामाजिक उपन्यास है। इसका प्रकाशन 1918 में हुआ। यह प्रेमचंद का पहला हिन्दी उपन्यास माना जाता है। इसमें सुमन नाम की स्त्री के जीवन के बहाने दहेज, बेमेल विवाह और वेश्या-समस्या का चित्रण है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) चतुरसेन शास्त्री - गलत। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ ‘वैशाली की नगरवधू’ और ‘गोली’ हैं।
- (B) प्रेमचंद - सही। यह उनकी प्रारम्भिक औपन्यासिक कृति है।
- (C) विश्वभरनाथ शर्मा - गलत। ये ‘कौशिक’ उपनाम से कहानियाँ लिखते थे, जैसे ‘ताई’।
- (D) जयशंकर प्रसाद - गलत। इनके उपन्यास ‘कंकाल’ और ‘तितली’ हैं।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (B) प्रेमचंद

1(c). 'इंदुमती' रचना की विधा है

- (A) कहानी
- (B) नाटक
- (C) उपन्यास
- (D) एकांकी

Correct Answer: (A) कहानी

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

'इंदुमती' किशोरीलाल गोस्वामी की रचना है। यह 1900 में 'सरस्वती' पत्रिका में छपी थी। इसे हिन्दी की आरम्भिक और कुछ विद्वानों के अनुसार पहली मौलिक कहानी माना जाता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) कहानी - सही। 'इंदुमती' एक छोटी कथा-रचना है, जो कहानी विधा में आती है।
- (B) नाटक - गलत। इसमें मंच और संवाद की रचना नहीं है।
- (C) उपन्यास - गलत। यह लम्बी कथा नहीं है। किशोरीलाल के उपन्यास अलग हैं, जैसे 'त्रिवेणी' और 'लवंगलता'।
- (D) एकांकी - गलत। एकांकी एक अंक का नाटक होता है।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (A) कहानी

1(d). 'कुटज' निबंध के लेखक हैं

- (A) यशपाल
- (B) हजारीप्रसाद द्विवेदी
- (C) 'अज्ञेय'
- (D) भारतेन्दु

Correct Answer: (B) हजारीप्रसाद द्विवेदी

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

‘कुटज’ एक ललित निबंध है, जिसके लेखक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हैं। इसमें हिमालय की शिवालिक पहाड़ियों पर उगने वाले कुटज के पौधे का वर्णन है। वह कठिन परिस्थितियों में भी हँसता हुआ जीता है। लेखक इससे जीवन में स्वाभिमान और अपराजित संघर्ष की सीख देते हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) यशपाल - गलत। ये ‘झूठा सच’ के उपन्यासकार हैं।
- (B) हजारीप्रसाद द्विवेदी - सही।
- (C) अज्ञेय - गलत। इनकी प्रसिद्ध कृति ‘शेखर : एक जीवनी’ है।
- (D) भारतेन्दु - गलत। इनकी रचना ‘भारत दुर्दशा’ नाटक है।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (B) हजारीप्रसाद द्विवेदी

1(e). छायावादोत्तर युग है

- (A) शुक्लोत्तर-युग
- (B) शुक्ल-युग
- (C) भारतेन्दु-युग
- (D) द्विवेदी-युग

Correct Answer: (A) शुक्लोत्तर-युग

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के युग क्रम से हैं: भारतेन्दु-युग (1850 से 1900), द्विवेदी-युग (1900 से 1918), शुक्ल-युग या छायावाद-युग (1918 से 1938) और उसके बाद शुक्लोत्तर-युग। छायावाद के बाद का काल, यानी लगभग 1938 से आगे, शुक्लोत्तर-युग या छायावादोत्तर-युग कहलाता है। इसमें प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता का विकास हुआ।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) शुक्लोत्तर-युग - सही।
- (B) शुक्ल-युग - गलत। यह छायावाद का समय है, उसके बाद का नहीं।
- (C) भारतेन्दु-युग - गलत। यह सबसे पहले का युग है।
- (D) द्विवेदी-युग - गलत। यह छायावाद से पहले का युग है।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (A) शुक्लोत्तर-युग

2(a). जयशंकर प्रसाद की महाकाव्यात्मक कृति है

- (A) 'झरना'
- (B) 'लहर'
- (C) 'कामायनी'
- (D) 'आँसू'

Correct Answer: (C) 'कामायनी'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

जयशंकर प्रसाद की सबसे प्रसिद्ध रचना 'कामायनी' (1936) है। यह आधुनिक हिन्दी का श्रेष्ठ महाकाव्य है। इसमें 15 सर्ग हैं। कथा मनु, श्रद्धा और इड़ा के माध्यम से मानव-मन के विकास और समरसता का संदेश देती है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) झरना - गलत। यह 1918 का छोटी कविताओं का संग्रह है।
- (B) लहर - गलत। यह 1933 का काव्य-संग्रह है, जिसमें 'अशोक की चिन्ता' जैसी कविताएँ हैं।
- (C) कामायनी - सही।
- (D) आँसू - गलत। यह विरह की भावना का छोटा गीतात्मक काव्य है।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (C) कामायनी

2(b). 'दूसरा सप्तक' का प्रकाशन-वर्ष है

- (A) 1943
- (B) 1959
- (C) 1961
- (D) 1951

Correct Answer: (D) 1951

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

अज्ञेय ने प्रयोगवादी कवियों के संकलन 'सप्तक' नाम से निकाले। इनमें सात-सात कवि होते थे। 'दूसरा सप्तक' 1951 में प्रकाशित हुआ। इसमें भवानीप्रसाद मिश्र, शकुन्तला माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय और धर्मवीर भारती हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) 1943 - गलत। यह 'तारसप्तक' का वर्ष है।
- (B) 1959 - गलत। यह 'तीसरा सप्तक' का वर्ष है।
- (C) 1961 - गलत। इस वर्ष कोई सप्तक नहीं निकला।
- (D) 1951 - सही।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (D) 1951

2(c). 'हालावाद' का प्रवर्तक कहा जाता है

- (A) गोपाल सिंह नेपाली को
- (B) हरिवंश राय 'बच्चन' को
- (C) भगवती चरण वर्मा को
- (D) महादेवी वर्मा को

Correct Answer: (B) हरिवंश राय 'बच्चन' को

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

हालावाद हिन्दी कविता की वह धारा है, जिसमें मदिरा, प्याला और साकी के प्रतीकों

से जीवन की मस्ती और दर्शन को कहा गया है। इसके प्रवर्तक हरिवंश राय 'बच्चन' हैं। उनकी 'मधुशाला' (1935), 'मधुबाला' और 'मधुकलश' इसी धारा की रचनाएँ हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) गोपाल सिंह नेपाली - गलत। ये प्रेम और प्रकृति के गीतकार हैं।
- (B) हरिवंश राय 'बच्चन' - सही।
- (C) भगवती चरण वर्मा - गलत। ये 'चित्रलेखा' उपन्यास के कारण प्रसिद्ध हैं।
- (D) महादेवी वर्मा - गलत। ये छायावाद की कवयित्री हैं और वेदना के लिए जानी जाती हैं।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (B) हरिवंश राय 'बच्चन'

2(d). सुमित्रानंदन पंत की रचना है

- (A) 'पल्लव'
- (B) 'साकेत'
- (C) 'कामायनी'
- (D) 'यामा'

Correct Answer: (A) 'पल्लव'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

पूछा गया है कि दी गई रचनाओं में से कौन-सी सुमित्रानंदन पंत की है। पंत छायावाद के चार प्रमुख कवियों में गिने जाते हैं और प्रकृति के सुकुमार कवि कहलाते हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) 'पल्लव': यह पंत का प्रसिद्ध काव्य-संग्रह है, जो 1926 में प्रकाशित हुआ। इसलिए यही सही है।

- (B) 'साकेत': यह मैथिलीशरण गुप्त का महाकाव्य है।
(C) 'कामायनी': यह जयशंकर प्रसाद का महाकाव्य है।
(D) 'यामा': यह महादेवी वर्मा का काव्य-संग्रह है।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (A) 'पल्लव' है।

2(e). 'रश्मिरथी' के रचनाकार हैं

- (A) जयशंकर प्रसाद
(B) सुमित्रानन्दन पन्त
(C) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(D) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

Correct Answer: (C) रामधारी सिंह 'दिनकर'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

'रश्मिरथी' एक प्रसिद्ध खंडकाव्य है। हमें इसके रचयिता का नाम चुनना है।

चरण 2: तथ्य:

'रश्मिरथी' की रचना रामधारी सिंह 'दिनकर' ने की। इसमें महाभारत के पात्र कर्ण के जीवन और उसके संघर्ष की कथा कही गई है। दिनकर वीर रस और राष्ट्रीय चेतना के कवि माने जाते हैं।

चरण 3: गलत विकल्प:

- (A) जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' और 'आँसू' लिखे।
(B) सुमित्रानन्दन पन्त की प्रमुख कृतियाँ 'पल्लव' और 'गुंजन' हैं।
(D) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने 'अनामिका' और 'परिमल' जैसी रचनाएँ दीं।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (C) रामधारी सिंह 'दिनकर' है।



3(i). गद्यांश: पृथ्वी और आकाश के अंतराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गंभीर सागर में जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का एक नया ठाट खड़ा करना है।

(i) पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

दिए गए गद्यांश का पाठ (निबन्ध) और उसके लेखक का नाम बताना है। गद्यांश में राष्ट्र के भौतिक स्वरूप, ज्ञान-विज्ञान और उद्यम की चर्चा है। यह विषय राष्ट्र से जुड़े निबन्ध का है।

चरण 2: पाठ और लेखक:

पाठ का शीर्षक: राष्ट्र का स्वरूप।

लेखक: डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल।

यह निबन्ध उनकी रचना 'पृथिवीपुत्र' में संकलित है। इसमें लेखक ने भूमि, जन और संस्कृति को राष्ट्र के तीन आधार बताया है।

अंतिम उत्तर:

शीर्षक 'राष्ट्र का स्वरूप' तथा लेखक डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल हैं।

3(ii). गद्यांश: पृथ्वी और आकाश के अंतराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गंभीर सागर में जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का एक नया ठाट खड़ा करना है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:

यह अंश 'राष्ट्र का स्वरूप' पाठ से लिया गया है। इसके लेखक डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल हैं।

चरण 2: प्रसंग:

लेखक राष्ट्र के भौतिक स्वरूप की चर्चा कर रहे हैं। वे कहते हैं कि पृथ्वी, आकाश और सागर की सम्पदा को जानने की भावना युवाओं में जागनी चाहिए।

चरण 3: शब्दार्थ:

जिज्ञासा = जानने की इच्छा। किरणें फूटना = नई चेतना का उदय होना। सोए हुए समान = निष्क्रिय, बेखबर।

चरण 4: व्याख्या:

लेखक का आशय है कि राष्ट्र के नवयुवकों के मन में जब तक प्रकृति की सम्पदा को जानने की नई इच्छा नहीं जागती, तब तक राष्ट्र जागृत नहीं माना जा सकता। धरती, आकाश और सागर में अपार भंडार भरे हैं। उन्हें जानने और काम में लाने की उत्सुकता ही राष्ट्र को आगे बढ़ाती है। जिज्ञासा के बिना राष्ट्र निष्क्रिय पड़ा रहता है।

निष्कर्ष:

युवाओं में ज्ञान-विज्ञान की जिज्ञासा जगाना राष्ट्र की उन्नति के लिए आवश्यक है। इस अंश की भाषा शुद्ध, सरल और भावपूर्ण है, शैली विचारात्मक है।

3(iii). गद्यांश: पृथ्वी और आकाश के अंतराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गंभीर सागर में जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का एक नया ठाट खड़ा करना है।

(iii) राष्ट्रीय चेतना में भौतिक ज्ञान-विज्ञान के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

गद्यांश के आधार पर बताना है कि राष्ट्र की चेतना में भौतिक ज्ञान-विज्ञान का क्या स्थान है।

चरण 2: उत्तर:

लेखक के अनुसार पृथ्वी, आकाश और सागर में असीम सामग्री और रत्न भरे हैं। इनके प्रति जागरूकता राष्ट्र में आनी चाहिए। विज्ञान इस सम्पदा को जानने का साधन है और उद्यम उसे काम में लाने का। दोनों के मेल से राष्ट्र का भौतिक स्वरूप नया और समृद्ध बनता है। इसलिए भौतिक ज्ञान-विज्ञान राष्ट्रीय चेतना का आवश्यक अंग है।

निष्कर्ष:

ज्ञान-विज्ञान के बिना राष्ट्र की भौतिक उन्नति और चेतना अधूरी है।

3(iv). गद्यांश: पृथ्वी और आकाश के अंतराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गंभीर सागर में जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का एक नया ठाट खड़ा करना है।

(iv) लेखक ने राष्ट्र की सुप्त अवस्था कब तक स्वीकार की है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

यह जानना है कि लेखक के अनुसार राष्ट्र कब तक सोया हुआ माना जाएगा।

चरण 2: उत्तर:

लेखक ने कहा है कि जब तक राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में पृथ्वी, आकाश और सागर की सम्पदा के प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें नहीं फूटतीं, तब तक राष्ट्र सोया हुआ रहता है। अर्थात् युवाओं में जानने की इच्छा जागते ही राष्ट्र की सुप्त अवस्था समाप्त हो जाती है।

निष्कर्ष:

नवयुवकों में जिज्ञासा जागने तक ही राष्ट्र की सुप्त अवस्था मानी गई है।

3(v). गद्यांश: पृथ्वी और आकाश के अंतराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गंभीर सागर में जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का एक नया ठाट खड़ा करना है।

(v) राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का नया ठाट कैसे खड़ा करना है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

गद्यांश की अंतिम पंक्ति में राष्ट्र के भौतिक स्वरूप के निर्माण का उपाय बताया गया है।

चरण 2: उत्तर:

लेखक के अनुसार विज्ञान और उद्यम, इन दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का नया ठाट खड़ा करना है। विज्ञान से प्रकृति की सम्पदा का ज्ञान होता है और उद्यम से उसका उपयोग किया जाता है। दोनों साथ चलें, तभी राष्ट्र का भौतिक स्वरूप नया और सुदृढ़ बनेगा।

निष्कर्ष:

विज्ञान और उद्यम के मेल से भौतिक स्वरूप का नया ठाट खड़ा होगा।

OR

3(i). गद्यांश: भारतीय साहित्य में, और इसलिए जीवन में भी इस पुष्प का प्रवेश और निर्गम दोनों ही विचित्र नाटकीय व्यापार हैं। ऐसा तो कोई नहीं कह सकेगा कि कालिदास के पूर्व भारतवर्ष में इस पुष्प का कोई नाम ही नहीं जानता था; परन्तु कालिदास के काव्यों में यह जिस शोभा और सौकुमार्य का भार लेकर प्रवेश करता है, वह पहले कहाँ था। उस प्रवेश में नववधू के गृह-प्रवेश की भाँति शोभा है, गरिमा है, पवित्रता है और सुकुमारता है।

(i) पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: पाठ की पहचान:

यह गद्यांश 'अशोक के फूल' शीर्षक ललित निबन्ध से लिया गया है। इसमें अशोक के फूल के साहित्य और जीवन में आने और जाने की बात कही गई है।

चरण 2: लेखक का परिचय:

इस निबन्ध के लेखक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हैं। वे हिन्दी के प्रसिद्ध निबन्धकार, आलोचक और उपन्यासकार थे। उनके निबन्धों में भारतीय संस्कृति और साहित्य की गहरी समझ दिखाई देती है।

अंतिम उत्तर:

पाठ का शीर्षक: 'अशोक के फूल'। लेखक का नाम: हजारीप्रसाद द्विवेदी।

3(ii). *गद्यांश:* भारतीय साहित्य में, और इसलिए जीवन में भी इस पुष्प का प्रवेश और निर्गम दोनों ही विचित्र नाटकीय व्यापार हैं। ऐसा तो कोई नहीं कह सकेगा कि कालिदास के पूर्व भारतवर्ष में इस पुष्प का कोई नाम ही नहीं जानता था; परन्तु कालिदास के काव्यों में यह जिस शोभा और सौकुमार्य का भार लेकर प्रवेश करता है, वह पहले कहाँ था। उस प्रवेश में नववधू के गृह-प्रवेश की भाँति शोभा है, गरिमा है, पवित्रता है और सुकुमारता है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: संदर्भ:

प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक के 'अशोक के फूल' नामक निबन्ध से ली गई है। इसके लेखक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हैं।

चरण 2: शब्दार्थ:

गरिमा: गौरव और गंभीरता। सुकुमारता: कोमलता। नववधू: नई दुल्हन। गृह-प्रवेश: दुल्हन का पहली बार ससुराल के घर में आना।

चरण 3: व्याख्या:

लेखक कहते हैं कि कालिदास के काव्य में अशोक के फूल का आना ऐसा है जैसे नई दुल्हन का पहली बार घर में आना। जैसे दुल्हन के आने पर घर में शोभा, गौरव, पवित्रता और कोमलता फैल जाती है, वैसे ही कालिदास के वर्णन से अशोक को सुन्दरता, प्रतिष्ठा और पवित्र भाव मिला। कालिदास से पहले यह फूल इतना आदर नहीं पा सका था। कवि की लेखनी ने उसे साहित्य में नया स्थान दिया।

चरण 4: विशेष:

यहाँ उपमा अलंकार है। भाषा तत्सम शब्दों से भरी हुई, सरल और प्रवाहपूर्ण है।

निष्कर्ष:

कालिदास ने अशोक के फूल को नववधू जैसा आदर और सौन्दर्य देकर साहित्य में अमर कर दिया।

3(iii). गद्यांश: भारतीय साहित्य में, और इसलिए जीवन में भी इस पुष्प का प्रवेश और निर्गम दोनों ही विचित्र नाटकीय व्यापार हैं। ऐसा तो कोई नहीं कह सकेगा कि कालिदास के पूर्व भारतवर्ष में इस पुष्प का कोई नाम ही नहीं जानता था; परन्तु कालिदास के काव्यों में यह जिस शोभा और सौकुमार्य का भार लेकर प्रवेश करता है, वह पहले कहाँ था। उस प्रवेश में नववधू के गृह-प्रवेश की भाँति शोभा है, गरिमा है, पवित्रता है और सुकुमारता है।

(iii) गद्यांश में लेखक ने किसके महत्व पर प्रकाश डाला है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश का विषय:

गद्यांश में पहले ही वाक्य में 'इस पुष्प' कहा गया है। पूरे निबन्ध का नाम 'अशोक के फूल' है, इसलिए यह पुष्प अशोक का है।

चरण 2: लेखक ने क्या महत्व बताया:

लेखक ने साहित्य और जीवन में अशोक के फूल के महत्व पर प्रकाश डाला है। वे बताते हैं कि कालिदास के काव्यों में इस फूल को अद्भुत शोभा और कोमलता मिली। इससे पहले यह फूल इतना सम्मानित नहीं था।

अंतिम उत्तर:

लेखक ने अशोक के फूल के साहित्यिक और जीवनगत महत्व को बताया है।

3(iv). गद्यांश: भारतीय साहित्य में, और इसलिए जीवन में भी इस पुष्प का प्रवेश और निर्गम दोनों ही विचित्र नाटकीय व्यापार हैं। ऐसा तो कोई नहीं कह सकेगा कि कालिदास के पूर्व भारतवर्ष में इस पुष्प का कोई नाम ही नहीं जानता था; परन्तु कालिदास के काव्यों में यह जिस शोभा और सौकुमार्य का भार लेकर प्रवेश करता है, वह पहले कहाँ था। उस प्रवेश में नववधू के गृह-प्रवेश की भाँति शोभा है, गरिमा है, पवित्रता है और सुकुमारता है।

(iv) “इस पुष्प का प्रवेश और निर्गम दोनों ही विचित्र नाटकीय व्यापार हैं” आशय स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: कथन का संदर्भ:

यह पंक्ति ‘अशोक के फूल’ निबन्ध की शुरुआत की है। ‘इस पुष्प’ से अशोक के फूल का संकेत है।

चरण 2: शब्दों का अर्थ:

प्रवेश: आना, यानी साहित्य और जीवन में अशोक का सामने आना। निर्गम: निकल जाना, यानी उसका भुला दिया जाना। नाटकीय व्यापार: नाटक की तरह अचानक बदलने वाली घटना।

चरण 3: आशय:

लेखक का कहना है कि अशोक का फूल भारतीय साहित्य में बड़ी शान से आया और कालिदास के काव्यों में खूब सजा। बाद में वही फूल धीरे-धीरे साहित्य और लोकजीवन से हट गया। नाटक में पात्र जैसे अचानक आता है और चला जाता है, वैसे ही अशोक का आना और जाना भी अनोखा है। इसलिए दोनों बातें विचित्र और नाटकीय हैं।

निष्कर्ष:

अशोक का साहित्य में आना और फिर भुला दिया जाना नाटक जैसी अनोखी घटना है।

3(v). गद्यांश: भारतीय साहित्य में, और इसलिए जीवन में भी इस पुष्प का प्रवेश और निर्गम दोनों ही विचित्र नाटकीय व्यापार हैं। ऐसा तो कोई नहीं कह सकेगा कि कालिदास के पूर्व भारतवर्ष में इस पुष्प का कोई नाम ही नहीं जानता था; परन्तु कालिदास के काव्यों में यह जिस शोभा और सौकुमार्य का भार लेकर प्रवेश करता है, वह पहले कहाँ था। उस प्रवेश में नववधू के गृह-प्रवेश की भाँति शोभा है, गरिमा है, पवित्रता है और सुकुमारता है।

(v) कालिदास के काव्य में अशोक के फूल का कैसा वर्णन मिलता है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश से उत्तर:

गद्यांश के अनुसार कालिदास के काव्य में अशोक का फूल बहुत शोभा और सुकुमारता के साथ आता है। उसका वर्णन इतना सुन्दर है कि वह पहले कहीं नहीं मिलता।

चरण 2: उपमा:

लेखक इस वर्णन की तुलना नई दुल्हन के गृह-प्रवेश से करता है। जैसे उसके आने पर घर में शोभा, गरिमा, पवित्रता और कोमलता आ जाती है, वैसे ही अशोक के प्रवेश में ये सभी गुण दिखते हैं।

अंतिम उत्तर:

कालिदास के काव्य में अशोक का वर्णन शोभा, गरिमा, पवित्रता और सुकुमारता से भरा हुआ मिलता है।

4(i). पद्यांश: दुःख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात;
एक परदा यह झीना नील
छिपाये है जिसमें सुख गात।
जिसे तुम समझे हो अभिशाप,
जगत की ज्वालाओं का मूल;
ईश का वह रहस्य वरदान
कभी मत इसको जाना भूल।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:

प्रस्तुत पद्यांश पाठ्यक्रम के 'श्रद्धा-मनु' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता छायावाद के प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद हैं। यह अंश उनके महाकाव्य 'कामायनी' के 'श्रद्धा' सर्ग से चुना गया है।

चरण 2: प्रसंग:

जल-प्रलय के बाद मनु अकेले और निराश हैं। उन्हें दुःख ही जीवन का सत्य लगता है। तब श्रद्धा उन्हें समझाती है कि दुःख के बाद सुख अवश्य आता है। इन पंक्तियों में वही आश्वासन दिया गया है।

निष्कर्ष:

पाठ 'श्रद्धा-मनु', कवि जयशंकर प्रसाद और महाकाव्य 'कामायनी' का श्रद्धा सर्ग, यही इस पद्यांश का सन्दर्भ है।

4(ii). पद्यांश: दुःख की पिछली रजनी बीच

विकसता सुख का नवल प्रभात;

एक परदा यह झीना नील

छिपाये है जिसमें सुख गात।

जिसे तुम समझे हो अभिशाप,

जगत की ज्वालाओं का मूल;

ईश का वह रहस्य वरदान

कभी मत इसको जाना भूल।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रसंग:

कामायनी के 'श्रद्धा' सर्ग में श्रद्धा निराश मनु को समझाती है। वह कहती है कि दुःख स्थायी नहीं है। इसी बात को इन रेखांकित पंक्तियों में कहा गया है।

चरण 2: शब्दार्थ:

रजनी = रात। नवल = नया। प्रभात = सवेरा। झीना = बारीक, हल्का। नील = नीला। गात = शरीर, रूप।

चरण 3: व्याख्या:

श्रद्धा मनु से कहती है कि दुःख की जो लम्बी रात बीती है, उसी के अन्तिम भाग में सुख का नया सवेरा खिलता है। जैसे रात के अँधेरे के बाद ही भोर होती है, वैसे ही कष्टों के बाद सुख आता है। दुःख एक हल्के नीले परदे के समान है। उसी परदे के पीछे सुख का सुन्दर रूप छिपा बैठा है। परदा हटते ही सुख दिखाई दे जाता है। इसलिए दुःख से घबराना उचित नहीं है।

चरण 4: काव्य-सौन्दर्य:

रजनी और प्रभात दुःख और सुख के प्रतीक हैं। सांगरूपक अलंकार है। भाषा तत्सम-प्रधान खड़ी बोली है और शैली छायावादी है।

4(iii). पद्यांश: दुःख की पिछली रजनी बीच

विकसता सुख का नवल प्रभात;

एक परदा यह झीना नील

छिपाये है जिसमें सुख गात।

जिसे तुम समझे हो अभिशाप,

जगत की ज्वालाओं का मूल;

ईश का वह रहस्य वरदान

कभी मत इसको जाना भूल।

(iii) प्रस्तुत पद्यांश का केन्द्रीय भाव लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: केन्द्रीय भाव:

इस पद्यांश का मूल भाव यह है कि दुःख जीवन का अन्त नहीं है। दुःख के बाद सुख अवश्य आता है। मनुष्य को हताश होकर बैठना नहीं चाहिए।

चरण 2: विस्तार:

श्रद्धा मनु से कहती है कि तुम जिस दुःख को अभिशाप और संसार की पीड़ा की जड़ मानते हो, वह वास्तव में ईश्वर का गूढ़ वरदान है। दुःख हमें मजबूत बनाता है और सुख का मूल्य सिखाता है।

निष्कर्ष:

कवि आशा, धैर्य और सकारात्मक सोच का सन्देश देता है।

4(iv). पद्यांश: दुःख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात;
एक परदा यह झीना नील
छिपाये है जिसमें सुख गात।
जिसे तुम समझे हो अभिशाप,
जगत की ज्वालाओं का मूल;
ईश का वह रहस्य वरदान
कभी मत इसको जाना भूल।

(iv) श्रद्धा किसके हताश मन को प्रेरणा दे रही है और कैसे?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: उत्तर:

श्रद्धा मनु के हताश मन को प्रेरणा दे रही है।

चरण 2: कैसे प्रेरणा दे रही है:

जल-प्रलय के बाद मनु दुःख, चिन्ता और अकेलेपन से टूट गए हैं। श्रद्धा उन्हें समझाती है कि दुःख की रात के बाद सुख का नया सवेरा आता है। वह कहती है कि दुःख एक पतला परदा है, जिसके पीछे सुख छिपा है। उसके अनुसार दुःख अभिशाप नहीं, ईश्वर का वरदान है। इन बातों से वह मनु के मन में आशा और उत्साह भरती है।

निष्कर्ष:

श्रद्धा आशावादी विचारों और सान्त्वना भरे शब्दों से मनु को प्रेरित करती है।

4(v). पद्यांशः दुःख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात;
एक परदा यह झीना नील
छिपाये है जिसमें सुख गात।
जिसे तुम समझे हो अभिशाप,
जगत की ज्वालाओं का मूल;
ईश का वह रहस्य वरदान
कभी मत इसको जाना भूल।

(v) 'रजनी' व 'प्रभात' शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रजनी के पर्यायवाची:

रजनी का अर्थ रात है। इसके दो पर्यायवाची शब्द हैं:

1. निशा
2. यामिनी

चरण 2: प्रभात के पर्यायवाची:

प्रभात का अर्थ सवेरा है। इसके दो पर्यायवाची शब्द हैं:

1. भोर
2. सुबह

अंतिम उत्तर:

रजनी: निशा, यामिनी। प्रभात: भोर, सुबह।

OR

4(i). पद्यांश: बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले?
पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले?
विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबो देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना!
जाग तुझको दूर जाना!

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: संदर्भ:

प्रस्तुत पद्यांश छायावाद की प्रमुख कवयित्री महादेवी वर्मा की कविता 'जाग तुझको दूर जाना' से लिया गया है। यह कविता हमारी पाठ्यपुस्तक के काव्य-खण्ड में संकलित है।

चरण 2: कविता का परिचय:

यह एक प्रेरणा-गीत है, जो महादेवी जी के काव्य-संग्रह 'सान्ध्यगीत' में मिलता है। इसमें कवयित्री अपने प्राणों को सांसारिक आकर्षणों में न उलझने और लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए जगाती हैं।

अंतिम उत्तर:

संदर्भ: पाठ 'जाग तुझको दूर जाना', कवयित्री महादेवी वर्मा।

4(ii). पद्यांश: बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले?
पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले?
विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबो देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना!
जाग तुझको दूर जाना!

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: संदर्भ:

पाठ: 'जाग तुझको दूर जाना', कवयित्री: महादेवी वर्मा।

चरण 2: शब्दार्थ:

क्रंदन: रोना-चीखना, दुःख की पुकार। मधुप: भौंरा। गुनगुन: भौंरे की मीठी ध्वनि।
दल: फूल की पंखुड़ी। ओस-गीले: ओस की बूंदों से भीगे हुए।

चरण 3: व्याख्या:

कवयित्री अपने प्राणों से पूछती हैं कि क्या भौंरे की मीठी गुनगुनाहट तुझे संसार के दुःख और पुकार भुला देगी? क्या ओस से भीगी फूलों की कोमल पंखुड़ियाँ तुझे अपने भीतर डुबो लेंगी? आशय यह है कि सुख और सौन्दर्य के आकर्षण साधक को उसके कर्तव्य से नहीं हटा सकते। जो व्यक्ति संसार की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझता है, वह क्षणिक सुखों में खोकर अपना लक्ष्य नहीं भूल सकता।

चरण 4: काव्य-सौन्दर्य:

प्रश्न शैली में दृढ़ संकल्प प्रकट हुआ है। 'मधुप की मधुर' में अनुप्रास है। भाषा सरल खड़ी बोली है और भाव छायावादी है।

निष्कर्ष:

सांसारिक सुख-सौन्दर्य लक्ष्य-पथ के साधक को बाँध नहीं सकते।

4(iii). पद्यांश: बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले?
पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले?
विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबो देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना!
जाग तुझको दूर जाना!

(iii) कवयित्री अपने प्रिय को प्रेरित करते हुए क्या कहती हैं?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

यहाँ पद्यांश के आधार पर बताना है कि कवयित्री अपने प्रिय को क्या प्रेरणा देती हैं।

चरण 2: पद्यांश के आधार पर उत्तर:

कवयित्री कहती हैं कि ये मोम जैसे कोमल और सजीले बंधन तुझे बाँध नहीं सकते। तितलियों के रंगीले पंख तेरे मार्ग की बाधा नहीं बनेंगे। भौंरे की गुनगुन और ओस-भीगे फूल भी तुझे संसार का दुःख नहीं भुलाएँगे। तू अपनी ही छाया को अपना कारागार मत बना। जाग, क्योंकि तुझे अभी बहुत दूर जाना है।

अंतिम उत्तर:

कवयित्री प्रिय से कहती हैं कि वह मोह के बंधनों को त्यागकर जागे और अपने लक्ष्य की ओर बढ़े।

4(iv). पद्यांश: बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले?
पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले?
विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबो देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना!
जाग तुझको दूर जाना!

(iv) 'बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: शब्दार्थ:

मोम के बंधन: मोम जैसे कोमल, पर पिघलाने वाले मोह के बंधन। सजीले: सजे हुए, आकर्षक।

चरण 2: भाव:

कवयित्री प्रश्न पूछती हैं कि क्या ये आकर्षक और कोमल सांसारिक बंधन तुझे बाँध लेंगे? इसका उत्तर स्वयं ही नहीं है। मोम कोमल होता है, इसलिए उसके बंधन कठोर नहीं दिखते, पर वे भी साधक को उलझा सकते हैं। कवयित्री का विश्वास है कि दृढ़ संकल्प वाला मन इनमें नहीं फँसेगा।

चरण 3: विशेष:

‘मोम के बंधन’ में रूपक है और प्रश्न शैली का प्रयोग हुआ है।

निष्कर्ष:

इस पंक्ति का भाव है कि सांसारिक सुखों के मोहक बंधन लक्ष्य की ओर बढ़ने वाले को रोक नहीं सकते।

4(v). पद्यांश: बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले?

पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले?

विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,

क्या डुबो देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले?

तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना!

जाग तुझको दूर जाना!

(v) कवयित्री अपने प्राणों को उद्धोधित करती हुई क्या कहती हैं?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

पद्यांश में कवयित्री अपने प्राणों को स्वयं संबोधित करके उन्हें जगा रही हैं।

चरण 2: उत्तर:

कवयित्री अपने प्राणों से कहती हैं कि सांसारिक आकर्षण, जैसे तितलियों के रंगीन पंख, भौंरे की गुनगुन और ओस-भीगे फूल, तेरा रास्ता न रोके। तू संसार का दुःख मत भूल। तू अपनी ही छाया को अपने लिए कारागार मत बना। अब जाग जा, क्योंकि तुझे अभी बहुत दूर जाना है।

अंतिम उत्तर:

कवयित्री प्राणों को मोह त्यागकर जागने और लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए कहती हैं।



5(a). निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **प्रो० जी० सुंदर रेड्डी**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: 80 शब्दों में साहित्यिक परिचय:

प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी का जन्म सन् 1919 ई० में आन्ध्र प्रदेश में हुआ। संस्कृत और तेलुगु का ज्ञान इन्हें आरम्भ में ही मिला, उच्च शिक्षा हिन्दी में हुई। ये आन्ध्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे। इन्होंने हिन्दी और तेलुगु साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करके दोनों भाषाओं को निकट लाने का कार्य किया। इनकी शैली विचारप्रधान और सरल है।

प्रमुख रचनाएँ: साहित्य और समाज, मेरे विचार, दक्षिण भारत की भाषाएँ और उनका साहित्य, वैचारिकी।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. ये हिन्दी भाषी और दक्षिण भारतीय क्षेत्रों के बीच साहित्यिक सेतु माने जाते हैं।
2. इनके निबन्धों में भाषा, साहित्य, समाज और राष्ट्रीय एकता जैसे विषय मिलते हैं।
3. भाषा तत्सम शब्दों से युक्त, गम्भीर और शुद्ध है, शैली विवेचनात्मक है।
4. अन्य कृतियाँ: हिन्दी और तेलुगु: एक तुलनात्मक अध्ययन, शोध और बोध।

निष्कर्ष:

प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी हिन्दी के विद्वान समीक्षक और निबन्धकार थे, जिन्होंने उत्तर-दक्षिण की भाषाओं को जोड़ने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: 80 शब्दों में साहित्यिक परिचय:

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म 29 मई सन् 1906 ई० को देवबन्द (सहारनपुर, उत्तर प्रदेश) में हुआ। ये स्वतन्त्रता सेनानी और पत्रकार भी थे तथा 'ज्ञानोदय' पत्रिका का सम्पादन किया। लघुकथा, संस्मरण, रेखाचित्र और ललित निबन्ध इनकी प्रिय विधाएँ हैं। भाषा सरल और भावपूर्ण तथा शैली मार्मिक है।

प्रमुख रचनाएँ: ज़िन्दगी मुस्कराई, बाजे पायलिया के घुँघरू, दीप जले शंख बजे, माटी हो गई सोना, आकाश के तारे धरती के फूल।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. इनका निधन 9 मई सन् 1995 ई० को हुआ।
2. इन्होंने 'नया जीवन' और 'विकास' जैसे पत्र भी निकाले।
3. इनकी रचनाओं में मानवीय संवेदना, सेवा-भाव और नैतिक मूल्यों पर बल मिलता है।
4. अन्य कृतियाँ: महके आँगन चहके द्वार, नई पीढ़ी नए विचार, क्षण बोले कण मुसकाए।

निष्कर्ष:

प्रभाकर जी हिन्दी के सफल निबन्धकार और संस्मरणकार थे, जिन्होंने छोटी-छोटी घटनाओं से जीवन की बड़ी सीख दी।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **हरिशंकर परसाई**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: 80 शब्दों में साहित्यिक परिचय:

हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त सन् 1924 ई० को होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) के जमानी गाँव में हुआ। इन्होंने अध्यापन छोड़कर स्वतन्त्र लेखन अपनाया और 'वसुधा' पत्रिका निकाली। समाज और राजनीति की विसंगतियों, पाखण्ड तथा भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य इनकी विशेषता है। भाषा सरल, बोलचाल की तथा शैली व्यंग्यात्मक है। प्रमुख रचनाएँ: हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे, भोलाराम का जीव, विकलांग श्रद्धा का दौर, रानी नागफनी की कहानी।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. इनका निधन 10 अगस्त सन् 1995 ई० को जबलपुर में हुआ।
2. 'विकलांग श्रद्धा का दौर' पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
3. इन्हें हिन्दी का श्रेष्ठ व्यंग्यकार माना जाता है।
4. अन्य कृतियाँ: वैष्णव की फिसलन, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, सदाचार का ताबीज, तब की बात और थी, तट की खोज।

निष्कर्ष:

परसाई जी ने व्यंग्य को हँसी से आगे बढ़ाकर समाज सुधार का साधन बनाया।

5(b). निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **मैथिलीशरण गुप्त**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: 80 शब्दों में साहित्यिक परिचय:

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त सन् 1886 ई० को चिरगाँव (झाँसी, उत्तर प्रदेश) में हुआ। ये महावीरप्रसाद द्विवेदी से प्रेरित थे और खड़ी बोली के प्रतिष्ठित कवि बने। राष्ट्रप्रेम, अतीत-गौरव और नारी के प्रति सम्मान इनके काव्य के मुख्य विषय हैं। इन्हें 'राष्ट्रकवि' कहा जाता है। भाषा शुद्ध खड़ी बोली है।

प्रमुख कृतियाँ: भारत-भारती, साकेत, यशोधरा, जयद्रथ वध, पंचवटी, द्वापर, नहुष।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. इनका निधन 12 दिसम्बर सन् 1964 ई० को हुआ।
2. 'साकेत' इनका श्रेष्ठ महाकाव्य है, जिसमें उर्मिला के त्याग का वर्णन है।
3. भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया और ये राज्यसभा के सदस्य रहे।
4. अन्य कृतियाँ: किसान, झंकार, विष्णुप्रिया, सिद्धराज, काबा और कर्बला।

निष्कर्ष:

गुप्त जी ने खड़ी बोली को काव्य की भाषा के रूप में स्थापित किया और राष्ट्रीय चेतना जगाई।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **सुमित्रानन्दन पन्त**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: 80 शब्दों में साहित्यिक परिचय:

सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म 20 मई सन् 1900 ई० को कौसानी (अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड) में हुआ। इनका मूल नाम गुसाईं दत्त था। ये छायावाद के प्रमुख कवि हैं और प्रकृति के सुकुमार कवि कहलाते हैं। इनकी काव्य-यात्रा छायावाद, प्रगतिवाद और अरविन्द-दर्शन से प्रभावित अध्यात्मवाद तक गई। भाषा कोमल और संगीतमय है।

प्रमुख कृतियाँ: वीणा, पल्लव, गुंजन, युगान्त, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, लोकायतन, चिदम्बरा।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. इनका निधन 28 दिसम्बर सन् 1977 ई० को हुआ।
2. 'चिदम्बरा' पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला और 'कला और बूढ़ा चाँद' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।
3. भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया।
4. अन्य कृतियाँ: ग्रन्थि, उत्तरा, स्वर्णधूलि, अतिमा, रजतशिखर।

निष्कर्ष:

पन्त जी ने प्रकृति-सौन्दर्य और मानवतावादी विचार को कोमल शब्दों में व्यक्त कर हिन्दी कविता को समृद्ध किया।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **रामधारी सिंह 'दिनकर'**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: 80 शब्दों में साहित्यिक परिचय:

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितम्बर सन् 1908 ई० को सिमरिया (बेगूसराय, बिहार) में हुआ। ये राष्ट्रीय चेतना और वीर रस के ओजस्वी कवि तथा गद्यकार थे। इन्हें 'राष्ट्रकवि' कहा जाता है। इनकी कविता में शोषण के विरुद्ध आक्रोश और भारतीय

संस्कृति के प्रति गौरव है। भाषा ओजपूर्ण खड़ी बोली है।

प्रमुख कृतियाँ: रेणुका, हुंकार, रसवन्ती, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, संस्कृति के चार अध्याय।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. इनका निधन 24 अप्रैल सन् 1974 ई० को हुआ।
2. 'संस्कृति के चार अध्याय' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार और 'उर्वशी' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।
3. भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया और ये राज्यसभा के सदस्य रहे।
4. अन्य कृतियाँ: सामधेनी, द्वन्द्वगीत, परशुराम की प्रतीक्षा, अर्धनारीश्वर।

निष्कर्ष:

दिनकर जी ने ओज और पौरुष से भरी कविता द्वारा देश को जगाया और हिन्दी साहित्य को नई ऊर्जा दी।

6. 'ध्रुवयात्रा' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: कहानी का परिचय:

'ध्रुवयात्रा' हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकार जैनेन्द्र कुमार की मनोवैज्ञानिक कहानी है। इसके मुख्य पात्र राजा रिपुदमन, उर्मिला और आचार्य मारुति हैं।

चरण 2: उद्देश्य (80 शब्दों में):

जैनेन्द्र कुमार की 'ध्रुवयात्रा' का उद्देश्य प्रेम को विवाह जैसे सामाजिक बन्धन से ऊँचा और पवित्र दिखाना है। उर्मिला राजा रिपुदमन को व्यक्तिगत सुख से ऊपर उठकर महान लक्ष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती है। कहानी बताती है कि सच्चा प्रेम त्याग, आत्मबलिदान और ऊँचे आदर्शों से जुड़ा होता है। साथ ही लेखक स्त्री-पुरुष के

सम्बन्ध, प्रेम और कर्तव्य के द्वन्द्व का मनोवैज्ञानिक चित्रण करता है।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. रिपुदमन उत्तरी ध्रुव जीतकर लौटता है, पर उर्मिला उसे दक्षिणी ध्रुव की यात्रा के लिए प्रेरित करती है।
2. उर्मिला पिता के कहने पर भी विवाह का सामाजिक बन्धन स्वीकार नहीं करती।
3. अन्त में रिपुदमन के आत्मबलिदान का समाचार मिलता है। इससे प्रेम की पवित्रता और त्याग की भावना और गहरी हो जाती है।

निष्कर्ष:

‘ध्रुवयात्रा’ का उद्देश्य प्रेम की श्रेष्ठता, त्याग और आदर्श की स्थापना है।

OR

‘लाटी’ कहानी का कथासार अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: कहानी का परिचय:

‘लाटी’ प्रसिद्ध कथाकार शिवानी की घटना-प्रधान कहानी है। इसके मुख्य पात्र कप्तान जोशी और उसकी पहली पत्नी बानो हैं।

चरण 2: कथासार (80 शब्दों में):

शिवानी की कहानी ‘लाटी’ में कप्तान जोशी का विवाह सुन्दर बानो से होता है। विवाह के तीसरे दिन वह युद्ध पर बसरा चला जाता है। ससुराल में सास-ननदों के तानों और कठोर श्रम से बानो क्षय रोग की शिकार हो जाती है। इलाज असम्भव जानकर वह नदी में कूद पड़ती है। कप्तान उसे मृत मानकर दूसरा विवाह कर लेता है। सोलह वर्ष बाद भुवाली में वह वैष्णवियों के दल में गूँगी ‘लाटी’ के रूप में मिलती है।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. कुमाऊँनी में ‘लाटी’ का अर्थ गूँगी होता है। बानो अपनी स्मृति और वाणी खो चुकी

है।

2. कहानी में नारी की पीड़ा और ससुराल में स्त्री द्वारा स्त्री के शोषण को दिखाया गया है।

3. बीते जीवन की करुण झलक के साथ कहानी मार्मिक अन्त पर पहुँचती है।

निष्कर्ष:

कथा बानो के दुःख, त्याग और अन्तिम अनपेक्षित मिलन को दर्शाती है।

7(a). 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
(अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रस्तावना:

सुमित्रानन्दन पन्त-रचित 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के नायक महात्मा गाँधी हैं। यह काव्य पन्त जी के महाकाव्य 'लोकायतन' का अंश है। इसमें 1921 से 1947 तक के स्वतन्त्रता-संग्राम का चित्रण है।

चरण 2: नायक की चारित्रिक विशेषताएँ:

1. सत्य और अहिंसा के पुजारी: गाँधी जी ने कठिन से कठिन समय में भी सत्य और अहिंसा का मार्ग नहीं छोड़ा। इन्हीं अस्त्रों से उन्होंने अंग्रेजी साम्राज्य को हिला दिया।
2. दृढ़ प्रतिज्ञ: नमक-कानून तोड़ने के लिए उन्होंने कहा कि यदि नमक-कर न तोड़ सका तो पथ में ही प्राण त्याग दूँगा।
3. मानवता के समर्थक: वे हर मनुष्य में ईश्वर का अंश मानते थे और कहते थे कि घृणा को घृणा से नहीं, प्रेम से जीता जा सकता है।
4. निर्भीक और साम्प्रदायिक एकता के हामी: दमन-चक्र से वे नहीं झुके। नोआखली के दंगों से आहत होकर उन्होंने आमरण अनशन का संकल्प किया।
5. सच्चे लोकनायक: वे उपदेश से नहीं, अपने आचरण से जनता को राह दिखाते थे। छुआछूत और जाति-भेद का उन्होंने विरोध किया।

निष्कर्ष:

गाँधी जी सत्य, अहिंसा, त्याग और मानव-प्रेम के मूर्त रूप हैं। 'मुक्तियज्ञ' में वे राष्ट्रपिता और युग-नायक के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

OR

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की कथावस्तु को संक्षेप में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: काव्य का परिचय:

'मुक्तियज्ञ' सुमित्रानन्दन पन्त का खण्डकाव्य है, जो 'लोकायतन' का अंश है। इसमें 1921 से 1947 तक गाँधी जी के नेतृत्व में चले स्वतन्त्रता-संग्राम की कथा है।

चरण 2: कथावस्तु:

कथा का आरम्भ नमक-कानून के विरोध से होता है। अंग्रेजों ने नमक पर कर बढ़ा दिया था। गाँधी जी साबरमती आश्रम से चौबीस दिन की यात्रा करके डाण्डी पहुँचे और समुद्र-तट पर नमक बनाकर कानून तोड़ा।

अंग्रेजी सरकार ने दमन-चक्र चलाया। नेताओं और सत्याग्रहियों से जेलें भर गईं। इसी बीच 1927 में साइमन कमीशन का देशव्यापी बहिष्कार हुआ। गाँधी जी ने छुआछूत और साम्प्रदायिक भेद-भाव के विरुद्ध भी अभियान चलाया।

1942 में उन्होंने 'भारत छोड़ो' का आह्वान किया। गाँधी जी और कांग्रेसी नेता बन्दी बनाए गए, तो जनता ने स्वयं हड़ताल और आन्दोलन किए। जेल में कस्तूरबा का देहान्त हुआ, पर गाँधी जी अपने कर्तव्य पर डटे रहे।

15 अगस्त 1947 को देश स्वतन्त्र हुआ, पर विभाजन का घाव भी मिला। नोआखली के दंगों से दुःखी होकर गाँधी जी ने अनशन का संकल्प किया। 30 जनवरी 1948 को नाथूराम गोडसे ने उनकी हत्या कर दी।

निष्कर्ष:

कवि का सन्देश है कि गाँधी जी का शरीर नष्ट हुआ, पर उनके विचार और उद्देश्य भारतीय चेतना में सदा जीवित रहेंगे।

7(b). 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की कथावस्तु को अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: काव्य का परिचय:

‘रश्मिरथी’ रामधारी सिंह ‘दिनकर’ का सात सर्गों वाला खण्डकाव्य है (1952)। इसका नायक महाभारत का पात्र कर्ण है। ‘रश्मिरथी’ का अर्थ है सूर्य-किरणों के रथ का सवार।

चरण 2: कथावस्तु (सर्ग-क्रम से):

1. प्रथम सर्ग: रंगभूमि में कर्ण अपनी धनुर्विद्या से सबको चकित करता है। अर्जुन से टक्कर माँगने पर उसे सूतपुत्र कहकर अपमानित किया जाता है। दुर्योधन उसे अंगदेश का राजा बनाकर मित्र बना लेता है।
2. द्वितीय सर्ग: कर्ण परशुराम के आश्रम में ब्राह्मण बनकर शिक्षा पाता है। जंघा पर कीड़े के काटने पर भी वह गुरु की नींद नहीं तोड़ता। सच जानकर परशुराम उसे शाप देते हैं कि निर्णायक समय पर वह अस्त्र-विद्या भूल जाएगा।
3. तृतीय सर्ग: श्रीकृष्ण पाण्डवों के लिए पाँच गाँव माँगने जाते हैं। दुर्योधन नहीं मानता और उन्हें बाँधना चाहता है। कृष्ण विराट रूप दिखाते हैं।
4. चतुर्थ सर्ग: इन्द्र ब्राह्मण बनकर कर्ण से कवच-कुण्डल दान में ले जाते हैं।
5. पंचम सर्ग: कुन्ती कर्ण को उसका जन्म-रहस्य बताकर पाण्डवों के पक्ष में बुलाती हैं। कर्ण मना कर देता है और वचन देता है कि अर्जुन को छोड़ किसी पाण्डव को नहीं मारेगा।
6. षष्ठ सर्ग: कर्ण भीष्म से आशीर्वाद लेकर युद्ध में उतरता है और घटोत्कच के संहार से कौरव-सेना को बचाने के लिए उस पर एकघ्नी शक्ति चला देता है।
7. सप्तम सर्ग: रथ का पहिया धँसने पर अर्जुन के बाण से कर्ण वीरगति पाता है।

निष्कर्ष:

काव्य दिखाता है कि मनुष्य की महानता जन्म से नहीं, कर्म और गुणों से बनती है।

OR

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: नायक का परिचय:

रामधारी सिंह 'दिनकर' कृत 'रश्मिरथी' का नायक कर्ण है। कुन्ती का पुत्र होकर भी वह सूत अधिरथ के घर पला और जीवन भर सूतपुत्र कहलाकर अपमान सहता रहा।

चरण 2: चारित्रिक विशेषताएँ:

1. महान योद्धा: रंगभूमि में उसकी धनुर्विद्या देखकर अर्जुन, द्रोण और भीष्म तक चकित रह गए।
2. स्वाभिमानी: वह जाति नहीं, कर्म को बड़ा मानता है। उसका भाव है कि तेजस्वी लोग गोत्र बताकर नहीं, अपना करतब दिखाकर सम्मान पाते हैं।
3. महादानी: इन्द्र के छल को जानकर भी उसने अपने जन्मजात कवच-कुण्डल दान कर दिए।
4. मित्रता का निर्वाह: दुर्योधन के उपकार के कारण उसने कुन्ती और कृष्ण के प्रलोभन ठुकरा दिए और अन्त तक मित्र का साथ दिया।
5. गुरुभक्त और सहनशील: परशुराम की नींद न टूटे, इसलिए कीड़े के डंक की पीड़ा चुपचाप सहता रहा।
6. सत्यवादी: गुरु से छल की भूल का उसे शाप मिला, फिर भी वह सत्य से नहीं हटा और कुन्ती को दिया वचन निभाया।

निष्कर्ष:

कर्ण वीर, दानी, स्वाभिमानी और मित्र-भक्त है। दिनकर ने उसे दुखी और उपेक्षित होते हुए भी महान चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया है।



7(c). 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य की कथावस्तु लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: काव्य का परिचय:

‘आलोकवृत्त’ गुलाब खण्डेलवाल का आठ सर्गों वाला खण्डकाव्य है। इसमें महात्मा गाँधी के जन्म से स्वतन्त्रता-प्राप्ति तक के जीवन और स्वाधीनता-संग्राम की कथा है।

चरण 2: कथावस्तु:

1. प्रथम सर्ग: भारत के गौरवशाली अतीत और पराधीनता का वर्णन है। गुजरात के पोरबन्दर में गाँधी जी का जन्म होता है।
2. द्वितीय सर्ग: बचपन की भूल पर पश्चात्ताप, माता को दिया मद्य-मांस त्याग का वचन, कस्तूरबा से विवाह, इंग्लैण्ड में पढ़ाई और बैरिस्टर बनकर वापसी।
3. तृतीय सर्ग: दक्षिण अफ्रीका में रेल से उतारे जाने पर रंगभेद का अपमान। वहाँ उन्होंने सत्य-अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह अपनाया।
4. चतुर्थ सर्ग: भारत लौटकर साबरमती आश्रम की स्थापना, चम्पारन के नील-किसानों और खेड़ा के सत्याग्रह का नेतृत्व।
5. पंचम सर्ग: नागपुर अधिवेशन और असहयोग आन्दोलन। साम्प्रदायिक दंगों से दुःखी होकर हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए इक्कीस दिन का उपवास।
6. षष्ठ सर्ग: चौबीस दिन की डाण्डी-यात्रा और नमक-सत्याग्रह, हजारों की गिरफ्तारी, गोलमेज सम्मेलन।
7. सप्तम सर्ग: द्वितीय विश्वयुद्ध, क्रिप्स मिशन की विफलता, भारत छोड़ो आन्दोलन, गाँधी जी का कारावास और कस्तूरबा से वार्तालाप।
8. अष्टम सर्ग: स्वतन्त्रता का उदय, साम्प्रदायिक दंगे और गाँधी जी की शान्ति-प्रार्थना।

निष्कर्ष:

काव्य गाँधी जी को सत्य, अहिंसा और मानव-कल्याण के आलोक-पुंज के रूप में प्रस्तुत करता है।

OR

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: नायक का परिचय:

गुलाब खण्डेलवाल रचित 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नायक महात्मा गाँधी हैं। पूरी कथा उन्हीं के जन्म से लेकर देश की स्वतन्त्रता तक के जीवन के चारों ओर घूमती है। वे धीरोदात्त नायक के रूप में चित्रित हुए हैं।

चरण 2: चरित्र की विशेषताएँ:

1. सत्य और अहिंसा के उपासक: अफ्रीका में रेल के डिब्बे से उतारे जाने पर उन्होंने बदले की भावना नहीं अपनाई। उन्होंने अहिंसा के बल पर सत्याग्रह का मार्ग चुना।
2. सच्चे देशभक्त: चम्पारण, खेड़ा, असहयोग, दाण्डी यात्रा और भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने तन, मन, धन देश को अर्पित कर दिया।
3. आत्मशुद्धि के आग्रही: बचपन में चोरी से मांस खाने पर वे पछताए और पिता से क्षमा माँगी। यह उनकी सच्चाई दिखाता है।
4. साम्प्रदायिक एकता के समर्थक: हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए उन्होंने इक्कीस दिन का उपवास रखा।
5. ईश्वर में आस्थावान: वे साधन की पवित्रता को महत्त्व देते थे और अन्त में देश में शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

निष्कर्ष:

गाँधीजी सत्य, अहिंसा, त्याग और देशप्रेम की जीवित मूर्ति हैं। वे सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रकाश-पुंज हैं, इसीलिए काव्य का नाम 'आलोकवृत्त' सार्थक है।

7(d). 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: नायक कौन है:

रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' रचित 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के नायक थानेश्वर और कन्नौज के सम्राट हर्षवर्धन हैं। पाँच सर्गों की सारी घटनाएँ उन्हीं के जीवन से जुड़ी हैं।

चरण 2: चरित्रांकन:

1. आदर्श पुत्र और भाई: पिता के बीमार होने का समाचार पाते ही वे आखेट छोड़कर तुरन्त लौट आते हैं। बहन राज्यश्री को आत्मदाह से बचाकर वे भाई का कर्तव्य निभाते हैं।
2. धैर्यवान: पिता, माता, बड़े भाई और बहनोई की मृत्यु के संकट में भी वे शान्त और धीर रहते हैं।
3. वीर योद्धा: छह वर्षों तक निरन्तर युद्ध करके उन्होंने उत्तर भारत के शत्रुओं को पराजित किया और साम्राज्य फैलाया।
4. न्यायप्रिय शासक: वे मानते हैं कि राजा का प्रजा के धन पर अपना अधिकार नहीं है, वह तो प्रजा का सेवक है।
5. महान त्यागी: प्रयाग में हर पाँचवें वर्ष वे अपना सारा राजकोष दान कर देते हैं और बहन से वस्त्र लेकर पहनते हैं।

निष्कर्ष:

हर्ष का चरित्र वीरता, कर्तव्य और त्याग का सुन्दर संगम है। इसीलिए काव्य का नाम 'त्यागपथी' उचित है।

OR

'त्यागपथी' खण्डकाव्य के किसी एक सर्ग की कथावस्तु लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: चुना गया सर्ग:

इस उत्तर में 'त्यागपथी' के प्रथम सर्ग की कथावस्तु दी जा रही है। यह खण्डकाव्य रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' की रचना है और इसमें कुल पाँच सर्ग हैं।

चरण 2: प्रथम सर्ग की कथा:

काव्य का आरम्भ हर्षवर्धन के किशोर काल और थानेश्वर के राजा प्रभाकरवर्धन के सुख-समृद्धि से भरे शान्त राज्य के वर्णन से होता है।

एक दिन राजकुमार हर्ष आखेट के लिए वन गए हुए थे। तभी उन्हें पिता के अस्वस्थ होने का समाचार मिलता है और वे तुरन्त वायु के वेग से राजधानी लौट आते हैं।

राजा की बीमारी बढ़ने पर माता यशोमती पति के साथ आत्मदाह का निश्चय कर लेती हैं। सबके समझाने पर भी वे अपने निर्णय पर अटल रहती हैं।

कुछ समय बाद पिता का भी निधन हो जाता है। इस प्रकार हर्ष पर शोक का भारी बोझ आ पड़ता है।

चरण 3: अन्य सर्गों की झलक:

आगे के सर्गों में राज्यवर्धन की मृत्यु, हर्ष की दिग्विजय, राज्यश्री की रक्षा और प्रयाग के त्याग-महोत्सव का वर्णन है।

निष्कर्ष:

प्रथम सर्ग हर्ष के भावी दायित्व और उनके चरित्र की आधारभूमि तैयार करता है।



7(e). 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
(अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: नायक का परिचय:

डॉ. शिवबालक शुक्ल रचित 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के नायक श्रवणकुमार हैं। वे अपने अन्धे माता-पिता के आदर्श सेवक हैं। पूरा काव्य उन्हीं के जीवन और उनकी मृत्यु की करुण घटना पर आधारित है।

चरण 2: चारित्रिक विशेषताएँ:

1. मातृ-पितृ भक्त: वे प्रातःकाल से सायंकाल तक अपने नेत्रहीन माता-पिता की सेवा में लगे रहते हैं।
2. सत्यवादी और निर्भीक: मृत्यु के समय भी वे राजा दशरथ के सामने सच्ची बात कहते हैं और घटना बताते हैं।
3. क्षमाशील: दशरथ के बाण से घायल होने पर भी वे उन पर क्रोध नहीं करते, बल्कि उन्हें सान्त्वना देते हैं।
4. अतिथि-सत्कार करने वाले: वे आश्रम में आने वालों का सम्मान करते हैं और धर्म का पालन करते हैं।
5. परोपकारी और सन्तोषी: वे सादा तपस्वी जीवन जीते हैं और माता-पिता की चिन्ता में ही अपना अन्तिम क्षण बिताते हैं।

निष्कर्ष:

श्रवणकुमार आदर्श पुत्र, त्यागी और क्षमाशील तपस्वी के रूप में चित्रित हैं। उनका जीवन हर पुत्र के लिए प्रेरणा है।

OR

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य की कथावस्तु लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: परिचय:

‘श्रवणकुमार’ खण्डकाव्य के रचयिता डॉ. शिवबालक शुक्ल हैं। इसकी कथा रामायण के प्रसंग पर आधारित है और यह नौ सर्गों में विभक्त है।

चरण 2: कथावस्तु का क्रम:

1. आरम्भ में अयोध्या नगरी और राजा दशरथ के वैभव का वर्णन है। वे सरयू के वन में शिकार की योजना बनाते हैं।
2. सरयू-तट के आश्रम में मुनिकुमार श्रवण अपने अन्धे माता-पिता की सेवा में लगे रहते हैं।
3. दशरथ आखेट के लिए निकलते हैं। रात में सरयू तट पर श्रवण माता-पिता के लिए जल भरने आते हैं।
4. घड़े की आवाज सुनकर दशरथ उसे पशु समझ बैठते हैं और शब्दभेदी बाण चला देते हैं। बाण श्रवण को लग जाता है।
5. सच्चाई जानकर दशरथ पछताते हैं और श्रवण के माता-पिता के पास जाकर अपराध बताते हैं।
6. पुत्र की मृत्यु से दुखी माता-पिता विलाप करते हुए दशरथ को शाप देते हैं कि तुम भी पुत्र-वियोग में प्राण त्यागोगे।
7. अन्त में श्रवण दिव्य रूप में दर्शन देते हैं। माता-पिता पुत्र-शोक में प्राण त्याग देते हैं और चिता में तीनों के शरीर भस्म हो जाते हैं। दशरथ लौटकर बाद में राम के वन-गमन के समय इस शाप को याद करते हैं।

निष्कर्ष:

काव्य की कथा करुण रस से भरी है और पुत्र-धर्म तथा कर्म-फल का सन्देश देती है।

7(f). 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य से सबसे प्रभावी व्यक्तित्व का चरित्रांकन कीजिए।
(अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सबसे प्रभावी व्यक्तित्व:

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी रचित 'सत्य की जीत' की नायिका द्रौपदी है। पूरी कथा उसी के साहस और आत्मबल के चारों ओर घूमती है, इसलिए वही सबसे प्रभावी पात्र है।

चरण 2: चरित्र की विशेषताएँ:

1. निर्भीक और साहसी: दुःशासन उसे केश पकड़कर सभा में लाता है, फिर भी वह डरती नहीं। वह ललकारती है, 'अरे ओ दुःशासन निर्लज्ज, देख तू नारी का भी क्रोध।'
2. स्वाभिमानी: वह अपमान को चुपचाप सहने से मना कर देती है।
3. बुद्धिमती और तर्कशील: वह सभा में पूछती है कि जो युधिष्ठिर स्वयं को हार चुके थे, उन्हें मुझे दाँव पर लगाने का अधिकार कैसे था।
4. सत्य और धर्म की समर्थक: वह कहती है कि सत्य, धर्म और न्याय मेरे साथ हैं।
5. आधुनिक नारी का रूप: वह अबला नहीं, दुर्गा के समान शक्ति-सम्पन्न है। उसके आत्मबल के आगे दुःशासन हार जाता है।

निष्कर्ष:

द्रौपदी निर्भीकता, स्वाभिमान, तर्क और नैतिक बल की प्रतिमूर्ति है। उसके चरित्र से ही 'सत्य की जीत' का सन्देश पूरा होता है।

OR

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की कथावस्तु अपने शब्दों में वर्णित कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: कथा का आधार:

'सत्य की जीत' के रचयिता द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी हैं। इसकी कथा महाभारत के सभापर्व में वर्णित द्रौपदी-चीरहरण की घटना पर आधारित है।

चरण 2: कथावस्तु:

दुर्योधन पाण्डवों को द्यूतक्रीड़ा के लिए बुलाता है। पाण्डव निमन्त्रण स्वीकार कर कौरवों के छल-जाल में फँस जाते हैं। कौरवों के छल से युधिष्ठिर जुए में निरन्तर हारते जाते हैं और अन्त में सर्वस्व हारने के बाद द्रौपदी को भी हार जाते हैं।

दुर्योधन के आदेश पर दुःशासन द्रौपदी के केश पकड़कर उसे सभा में घसीट लाता है। द्रौपदी निडर होकर पूछती है कि जो स्वयं को हार चुका, उसे मुझे दाँव पर लगाने का अधिकार कैसे था। विकर्ण उसका समर्थन करता है। दुःशासन बल के घमण्ड में उसका चीर खींचने लगता है। द्रौपदी का आत्मबल इतना प्रबल होता है कि दुःशासन लज्जित और पराजित हो जाता है।

चरण 3: परिणाम:

सभा में अन्याय की निन्दा होती है। धृतराष्ट्र सत्य को पहचान कर पाण्डवों को दासता से मुक्त करते हैं। इस प्रकार अन्त में सत्य की विजय होती है।

निष्कर्ष:

खण्डकाव्य का सन्देश है कि पशुबल चाहे जितना बड़ा हो, सत्य और आत्मबल के सामने उसे झुकना पड़ता है।

8(a). दिये गये संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिये: संस्कृतस्य साहित्यं सरसं, व्याकरणञ्च सुनिश्चितम् । तस्य गद्ये पद्ये च लालित्यं, भावबोधसामर्थ्यम्, अद्वितीयं श्रुतिमाधुर्यञ्च वर्तते । किं बहुना चरित्रनिर्माणार्थं यादृशीं सत्प्रेरणां संस्कृतवाङ्मयं ददाति न तादृशीं किञ्चिदन्यत् । मूलभूतानां मानवीयगुणानां यादृशीं विवेचना संस्कृतसाहित्ये वर्तते, नान्यत्र तादृशी ।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्' से लिया गया है। इसमें संस्कृत भाषा और साहित्य की विशेषताएँ बताई गई

हैं।

चरण 2: शब्दार्थ:

सरसम् = रसपूर्ण, आनन्ददायक। सुनिश्चितम् = भलीभाँति निश्चित, नियमबद्ध।
लालित्यम् = सुन्दरता, कोमलता। भावबोधसामर्थ्यम् = भाव समझाने की शक्ति।
श्रुतिमाधुर्यम् = सुनने में मधुरता। वाङ्मयम् = साहित्य। विवेचना = विश्लेषण, व्याख्या।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:

संस्कृत का साहित्य रसपूर्ण है और उसका व्याकरण सुनिश्चित है। उसके गद्य और पद्य में सुन्दरता, भावों को समझाने की शक्ति और अनुपम श्रवण-मधुरता है। अधिक क्या कहा जाए, चरित्र-निर्माण के लिए जैसी श्रेष्ठ प्रेरणा संस्कृत साहित्य देता है, वैसी कोई दूसरा साहित्य नहीं देता। मूल मानवीय गुणों का जैसा विवेचन संस्कृत साहित्य में मिलता है, वैसा और कहीं नहीं मिलता।

चरण 4: सार:

संस्कृत भाषा मधुर, नियमबद्ध और चरित्र गढ़ने वाली है। इसीलिए उसका साहित्य सबसे अलग और श्रेष्ठ माना जाता है।

OR

दिये गये संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिये:
अतीते प्रथमकल्पे जनाः एकमभिरूपं सौभाग्यप्राप्तं सर्वाकारपरिपूर्णं पुरुषं राजानमकुर्वन् ।
चतुष्पदा अपि सन्निपत्य एकं सिंहं राजानमकुर्वन् । ततः शकुनिगणाः हिमवत्प्रदेशे एकस्मिन्
पाषाणे सन्निपत्य मनुष्येषु राजा प्रज्ञायते तथा चतुष्पदेषु च । अस्माकं पुनरन्तरे राजा नास्ति ।
अराजको वासो नाम न वर्तते । एको राजस्थाने स्थापयितव्यः इति उक्तवन्तः । अथ ते
परस्परमवलोकयन्तः एकमुलूकं दृष्ट्वा 'अयं नो रोचते' इत्यवोचन् ।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:

यह गद्यांश 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'जातक-कथा' से लिया गया है। इसका

सम्बन्ध उलूक-जातक की कथा से है, जिसमें पक्षियों द्वारा राजा चुनने का वर्णन है।

चरण 2: शब्दार्थ:

अतीते प्रथमकल्पे = बहुत प्राचीन पहले कल्प में। अभिरूपम् = सुन्दर।

सौभाग्यप्राप्तम् = भाग्यशाली। चतुष्पदाः = चौपाए पशु। शकुनिगणाः = पक्षियों के समूह। सन्निपत्य = एकत्र होकर। अराजकः = राजा से रहित। उलूकम् = उल्लू।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:

बहुत पहले, प्रथम कल्प में लोगों ने एक सुन्दर, भाग्यशाली और सब प्रकार से पूर्ण पुरुष को राजा बनाया। चौपाए पशुओं ने भी इकट्ठे होकर एक सिंह को राजा बनाया। तब पक्षियों के झुण्ड हिमालय प्रदेश में एक चट्टान पर एकत्र हुए और बोले: मनुष्यों में राजा जाना जाता है और चौपायों में भी, पर हमारे बीच कोई राजा नहीं है। बिना राजा के रहना ठीक नहीं है। किसी एक को राजा के स्थान पर बैठाना चाहिए। फिर उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखते हुए एक उल्लू को देखा और कहा: यह हमें पसन्द है।

चरण 4: सार:

मनुष्यों और पशुओं की तरह पक्षियों ने भी अपना राजा चुनना चाहा और उनकी दृष्टि उल्लू पर टिकी।

8(b). दिये गये श्लोकों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

जल-बिन्दु-निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।

स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च ॥

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:

यह श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'सुभाषितरत्नानि' से लिया गया है। इस पाठ में जीवन को सही राह दिखाने वाले सुन्दर सुभाषित संकलित हैं।

चरण 2: शब्दार्थ:

जल-बिन्दु-निपातेन = जल की बूँदों के गिरने से। क्रमशः = धीरे-धीरे। पूर्यते = भर जाता है। घटः = घड़ा। सः = वह। हेतुः = कारण। सर्वविद्यानाम् = सभी विद्याओं का। धर्मस्य = धर्म का। धनस्य = धन का।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:

जल की बूँद-बूँद गिरने से घड़ा धीरे-धीरे भर जाता है। यही (क्रमिक प्रयास) सभी विद्याओं, धर्म और धन की प्राप्ति का कारण है।

चरण 4: भावार्थ:

जैसे एक-एक बूँद से घड़ा भर जाता है, वैसे ही थोड़ा-थोड़ा नित्य सीखने, थोड़ा-थोड़ा पुण्य करने और थोड़ा-थोड़ा धन जोड़ने से बड़ी सफलता मिलती है। विद्या, धर्म और धन एक दिन में नहीं मिलते, इनके लिए निरन्तर अभ्यास और धैर्य चाहिए।

OR

दिये गये श्लोकों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

जयन्ति ते महाभागा जन-सेवा-परायणाः ।

जरामृत्युभयं नास्ति येषां कीर्तितनोः क्वचित् ॥

Correct Answer: —

Solution:**चरण 1: सन्दर्भ:**

यह श्लोक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'महामना मालवीयः' से लिया गया है। इसमें जनसेवा करने वाले महापुरुषों की प्रशंसा की गई है।

चरण 2: शब्दार्थ:

जयन्ति = विजयी होते हैं। महाभागाः = महान भाग्य वाले, महापुरुष। जन-सेवा-परायणाः = जनसेवा में लगे रहने वाले। जरामृत्युभयम् = बुढ़ापे और मृत्यु का डर। येषाम् = जिनके। कीर्तितनोः = यशरूपी शरीर को। क्वचित् = कहीं भी।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:

जनसेवा में तत्पर रहने वाले वे महापुरुष जयवन्त होते हैं, जिनके यशरूपी शरीर को कहीं भी बुढ़ापे और मृत्यु का भय नहीं होता।

चरण 4: भावार्थ:

मनुष्य का भौतिक शरीर नष्ट हो जाता है, पर जनसेवा से मिली कीर्ति सदा जीवित रहती है। इसलिए सेवाभावी लोग मरने के बाद भी लोगों के मन में अमर रहते हैं। मालवीय जी ऐसे ही महापुरुष थे।

9. निम्नलिखित मुहावरों एवं लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **अक्ल के घोड़े दौड़ाना**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

यहाँ मुहावरा 'अक्ल के घोड़े दौड़ाना' चुना गया है। इसका अर्थ लिखना है और वाक्य में प्रयोग करना है।

चरण 2: अर्थ:

अक्ल के घोड़े दौड़ाना का अर्थ है किसी समस्या को हल करने के लिए बहुत सोचना और तरह-तरह की युक्तियाँ लगाना। जब सीधा रास्ता न मिले, तब बुद्धि से उपाय खोजा जाता है।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:

परीक्षा में कठिन प्रश्न देखकर रमेश ने बहुत अक्ल के घोड़े दौड़ाए, तब जाकर उसे सही उत्तर सूझा।

अंतिम उत्तर:

अर्थ: खूब सोच-विचार कर उपाय खोजना। प्रयोग: ऊपर लिखा वाक्य।

OR

निम्नलिखित मुहावरों एवं लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **बालू से तेल निकालना**

Correct Answer: —

Solution:**चरण 1: प्रश्न को समझें:**

यहाँ मुहावरा 'बालू से तेल निकालना' चुना गया है। इसका अर्थ और वाक्य में प्रयोग लिखना है।

चरण 2: अर्थ:

बालू में तेल होता ही नहीं, इसलिए उससे तेल निकालना असंभव है। इसी आधार पर इसका अर्थ है ऐसा काम करना जो हो ही न सके, या ऐसी जगह से कुछ पाने की आशा करना जहाँ कुछ है ही नहीं।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:

कंजूस सेठ से दान माँगना बालू से तेल निकालने के समान है।

अंतिम उत्तर:

अर्थ: असंभव कार्य करने का प्रयास करना। प्रयोग: ऊपर लिखा वाक्य।

OR

निम्नलिखित मुहावरों एवं लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **अपना हाथ जगन्नाथ**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

यहाँ लोकोक्ति 'अपना हाथ जगन्नाथ' चुनी गई है। इसका अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग करना है।

चरण 2: अर्थ:

अपना काम अपने हाथ से करने में ही भलाई है। दूसरों पर निर्भर रहने से काम बिगड़ सकता है या देर से होता है। अपने हाथ से किया हुआ काम ही भरोसे का होता है।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:

नौकर पर भरोसा न करके सुरेश ने अपना सामान स्वयं बाँधा, क्योंकि अपना हाथ जगन्नाथ होता है।

अंतिम उत्तर:

अर्थ: अपना काम स्वयं करना ही अच्छा है। प्रयोग: ऊपर लिखा वाक्य।

OR

निम्नलिखित मुहावरों एवं लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **आँख के अंधे नाम नयनसुख**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

यहाँ लोकोक्ति 'आँख के अंधे नाम नयनसुख' चुनी गई है। इसका अर्थ और वाक्य-प्रयोग लिखना है।

चरण 2: अर्थ:

नयनसुख का शाब्दिक अर्थ है आँखों को सुख देने वाला या अच्छी आँखों वाला। जब किसी का नाम गुण के बिल्कुल उलटा हो, जैसे अंधे का नाम नयनसुख, तब यह

लोकोक्ति कही जाती है। अर्थ है नाम बड़ा और गुण उसके विपरीत।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:

उस कंजूस का नाम दानवीर है, यह तो आँख के अंधे नाम नयनसुख वाली बात हुई।

अंतिम उत्तर:

अर्थ: गुण के विपरीत नाम होना। प्रयोग: ऊपर लिखा वाक्य।



10(i). *अपठित गद्यांश:* आधुनिक युग में योग का महत्व बढ़ गया है। इसके बढ़ने का कारण व्यस्तता और मन की व्यग्रता है। यदि मनुष्य शारीरिक रूप से स्वस्थ है, तो वह संसार में रहकर जीवन का सुख भोग सकता है और अपने सभी कर्तव्यों एवं मनोकामनाओं को पूर्ण कर सकता है। शरीर ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने सभी कामों को संपन्न कर सकते हैं। इसलिए अपने शरीर को स्वस्थ रखना हमारा प्रथम कर्तव्य है, जिसे योग द्वारा स्वस्थ बनाया जा सकता है। 21 जून, 2015 को प्रथम बार सम्पूर्ण विश्व में 'विश्व योग दिवस' मनाया गया। इसके साथ ही यह घोषणा भी की गई कि प्रत्येक वर्ष 21 जून को विश्व योग दिवस के रूप में मनाया जायेगा।

(i) हमारा प्रथम कर्तव्य क्या है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

प्रश्न में पूछा गया है कि गद्यांश के अनुसार हमारा सबसे पहला कर्तव्य क्या है। उत्तर गद्यांश की पंक्तियों से ही देना है।

चरण 2: गद्यांश से प्रमाण:

गद्यांश में लिखा है, इसलिए अपने शरीर को स्वस्थ रखना हमारा प्रथम कर्तव्य है। कारण यह बताया गया है कि शरीर ही वह माध्यम है, जिससे हम अपने सभी काम पूरे करते हैं।

अंतिम उत्तर:

हमारा प्रथम कर्तव्य अपने शरीर को स्वस्थ रखना है, जिसे योग द्वारा स्वस्थ बनाया जा सकता है।

10(ii). *अपठित गद्यांश:* आधुनिक युग में योग का महत्व बढ़ गया है। इसके बढ़ने का कारण व्यस्तता और मन की व्यग्रता है। यदि मनुष्य शारीरिक रूप से स्वस्थ है, तो वह संसार में रहकर जीवन का सुख भोग सकता है और अपने सभी कर्तव्यों एवं मनोकामनाओं को पूर्ण कर सकता है। शरीर ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने सभी कामों को संपन्न कर सकते हैं। इसलिए अपने शरीर को स्वस्थ रखना हमारा प्रथम कर्तव्य है, जिसे योग द्वारा स्वस्थ बनाया जा सकता है। 21 जून, 2015 को प्रथम बार सम्पूर्ण विश्व में 'विश्व योग दिवस' मनाया गया। इसके साथ ही यह घोषणा भी की गई कि प्रत्येक वर्ष 21 जून को विश्व योग दिवस के रूप में मनाया जायेगा।

(ii) शरीर का स्वस्थ रहना क्यों आवश्यक है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

पूछा गया है कि शरीर का स्वस्थ रहना क्यों आवश्यक है। इसका कारण गद्यांश के दूसरे और तीसरे वाक्य में मिलता है।

चरण 2: कारण:

1. स्वस्थ मनुष्य संसार में रहकर जीवन का सुख भोग सकता है।
2. वह अपने सभी कर्तव्यों और मनोकामनाओं को पूरा कर सकता है।
3. शरीर ही वह माध्यम है, जिससे हम अपने सारे काम संपन्न करते हैं।

अंतिम उत्तर:

शरीर के स्वस्थ रहने पर ही मनुष्य जीवन का सुख ले पाता है और अपने कर्तव्य तथा इच्छाएँ पूरी कर पाता है, इसलिए स्वस्थ शरीर आवश्यक है।

10(iii). *अपठित गद्यांश:* आधुनिक युग में योग का महत्व बढ़ गया है। इसके बढ़ने का कारण व्यस्तता और मन की व्यग्रता है। यदि मनुष्य शारीरिक रूप से स्वस्थ है, तो वह संसार में रहकर जीवन का सुख भोग सकता है और अपने सभी कर्तव्यों एवं मनोकामनाओं को पूर्ण कर सकता है। शरीर ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने सभी कामों को संपन्न कर सकते हैं। इसलिए अपने शरीर को स्वस्थ रखना हमारा प्रथम कर्तव्य है, जिसे योग द्वारा स्वस्थ बनाया जा सकता है। 21 जून, 2015 को प्रथम बार सम्पूर्ण विश्व में 'विश्व योग दिवस' मनाया गया। इसके साथ ही यह घोषणा भी की गई कि प्रत्येक वर्ष 21 जून को विश्व योग दिवस के रूप में मनाया जायेगा।

(iii) आधुनिक युग में योग का महत्व क्यों बढ़ा है? स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

प्रश्न है कि आधुनिक युग में योग का महत्व क्यों बढ़ा है। इसका सीधा कारण गद्यांश के पहले दो वाक्यों में दिया है।

चरण 2: कारण:

गद्यांश के अनुसार योग का महत्व बढ़ने के दो कारण हैं: व्यस्तता और मन की व्यग्रता। आज के जीवन में व्यक्ति के पास समय कम है और मन अशांत रहता है।

चरण 3: स्पष्टीकरण:

योग से शरीर स्वस्थ रहता है और मन शांत होता है। स्वस्थ शरीर से मनुष्य अपने कर्तव्य निभा पाता है। इसी कारण योग का महत्व बढ़ा। इसी का प्रमाण यह भी है कि 21 जून 2015 को पूरे विश्व में पहली बार विश्व योग दिवस मनाया गया।

अंतिम उत्तर:

व्यस्त जीवन और मन की व्यग्रता के कारण आधुनिक युग में योग का महत्व बढ़ गया है।

OR

10(i). *अपठित गद्यांश:* बाढ़ की विभीषिका का दृश्य बहुत भयानक होता है। चारों ओर अफ़रा-तफ़री का माहौल होता है। लोग अपनी जान बचाने का विफल प्रयास करते नज़र आते हैं। जल-प्रवाह तेज़ होने या नदियों के तटबंध टूटने से आई बाढ़ में लोगों को अपनी जान बचाने का भी मौका नहीं मिलता। मिट्टी तथा खपरैल से बने घर, ताश के पत्तों की तरह बाढ़ के पानी में बहते नज़र आते हैं। लोग जान बचाने के लिए ऊँचे स्थानों की शरण लेते नज़र आते हैं। ऐसी विपदा की स्थिति में नदी में जान बचाने के लिए तैरते साँप दुःख एवं भय को और बढ़ा देते हैं। सरकार द्वारा लोगों को बचाने के लिए नावों एवं हेलीकॉप्टरों से उन तक खाद्य सामग्री पहुँचाने का प्रबंध भी किया जाता है।

(i) बाढ़ की विभीषिका का दृश्य कैसा होता है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

प्रश्न में बाढ़ की विभीषिका के दृश्य का स्वरूप पूछा गया है। इसका उत्तर गद्यांश के पहले वाक्य में है।

चरण 2: गद्यांश से उत्तर:

गद्यांश के अनुसार बाढ़ की विभीषिका का दृश्य बहुत भयानक होता है। चारों ओर अफ़रा-तफ़री का माहौल रहता है और लोग जान बचाने के लिए भागते दिखते हैं।

अंतिम उत्तर:

बाढ़ की विभीषिका का दृश्य बहुत भयानक होता है।

10(ii). *अपठित गद्यांश:* बाढ़ की विभीषिका का दृश्य बहुत भयानक होता है। चारों ओर अफ़रा-तफ़री का माहौल होता है। लोग अपनी जान बचाने का विफल प्रयास करते नज़र आते हैं। जल-प्रवाह तेज़ होने या नदियों के तटबंध टूटने से आई बाढ़ में लोगों को अपनी जान बचाने का भी मौका नहीं मिलता। मिट्टी तथा खपरैल से बने घर, ताश के पत्तों की तरह बाढ़ के पानी में बहते नज़र आते हैं। लोग जान बचाने के लिए ऊँचे स्थानों की शरण लेते नज़र आते हैं। ऐसी विपदा की स्थिति में नदी में जान बचाने के लिए तैरते साँप दुःख एवं भय को और बढ़ा देते हैं। सरकार द्वारा लोगों को बचाने के लिए नावों एवं हेलीकॉप्टरों से उन तक खाद्य सामग्री पहुँचाने का प्रबंध भी किया जाता है।

(ii) जल-प्रवाह तेज़ होने से क्या प्रभाव पड़ता है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

पूछा गया है कि जल-प्रवाह तेज़ होने का क्या प्रभाव पड़ता है। इसका उत्तर गद्यांश के चौथे वाक्य में है।

चरण 2: गद्यांश से उत्तर:

गद्यांश में लिखा है कि जल-प्रवाह तेज़ होने या नदियों के तटबंध टूटने से जो बाढ़ आती है, उसमें लोगों को अपनी जान बचाने का भी मौका नहीं मिलता। साथ ही मिट्टी और खपरैल के घर ताश के पत्तों की तरह पानी में बह जाते हैं।

अंतिम उत्तर:

तेज़ प्रवाह से लोगों को जान बचाने का अवसर नहीं मिलता और कच्चे घर बह जाते हैं।

10(iii). अपठित गद्यांश: बाढ़ की विभीषिका का दृश्य बहुत भयानक होता है। चारों ओर अफ़रा-तफ़री का माहौल होता है। लोग अपनी जान बचाने का विफल प्रयास करते नज़र आते हैं। जल-प्रवाह तेज़ होने या नदियों के तटबंध टूटने से आई बाढ़ में लोगों को अपनी जान बचाने का भी मौका नहीं मिलता। मिट्टी तथा खपरैल से बने घर, ताश के पत्तों की तरह बाढ़ के पानी में बहते नज़र आते हैं। लोग जान बचाने के लिए ऊँचे स्थानों की शरण लेते नज़र आते हैं। ऐसी विपदा की स्थिति में नदी में जान बचाने के लिए तैरते साँप दुःख एवं भय को और बढ़ा देते हैं। सरकार द्वारा लोगों को बचाने के लिए नावों एवं हेलीकॉप्टरों से उन तक खाद्य सामग्री पहुँचाने का प्रबंध भी किया जाता है।

(iii) सरकार द्वारा लोगों की जान बचाने के लिए क्या किया जाता है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

प्रश्न में पूछा गया है कि बाढ़ में लोगों की जान बचाने के लिए सरकार क्या करती है। इसका उत्तर गद्यांश के अंतिम वाक्य में है।

चरण 2: गद्यांश से उत्तर:

सरकार लोगों को बचाने के लिए नावों और हेलीकॉप्टरों की व्यवस्था करती है। इन साधनों से बाढ़ में फँसे लोगों तक खाद्य सामग्री पहुँचाई जाती है।

अंतिम उत्तर:

सरकार नावों और हेलीकॉप्टरों से लोगों तक खाद्य सामग्री पहुँचाने का प्रबंध करती है।

11(a)(i). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए: अवलंब-अविलंब -

- (A) लगातार और सुंदर
- (B) सहारा और शीघ्र
- (C) शीघ्र और सहारा
- (D) सुंदर और लगातार

Correct Answer: (B) सहारा और शीघ्र

Solution:

चरण 1: शब्दों के अर्थ:

अवलंब का अर्थ है सहारा या आश्रय, जैसे: निर्बल को अवलंब देना।

अविलंब का अर्थ है बिना देर के, अर्थात् शीघ्र।

दोनों शब्द सुनने में मिलते-जुलते हैं, पर अर्थ बिलकुल अलग हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

(A) लगातार और सुंदर: दोनों अर्थ गलत हैं। लगातार अविराम का और सुंदर अभिराम का अर्थ है।

(B) सहारा और शीघ्र: अवलंब = सहारा, अविलंब = शीघ्र। क्रम और अर्थ दोनों सही हैं।

(C) शीघ्र और सहारा: अर्थ सही हैं, पर क्रम उलटा है, इसलिए गलत है।

(D) सुंदर और लगातार: दोनों अर्थ प्रश्न के शब्दों से मेल नहीं खाते।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (B) सहारा और शीघ्र।

11(a)(ii). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए: भवन-भुवन -

- (A) घर और संसार
- (B) संसार और घर
- (C) महल और संसार
- (D) संसार और महल

Correct Answer: (A) घर और संसार

Solution:

चरण 1: शब्दों के अर्थ:

भवन का अर्थ है घर, मकान या इमारत, जैसे: विद्यालय का भवन।

भुवन का अर्थ है संसार, लोक या जगत, जैसे: तीनों भुवनों में उसका यश फैला।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

(A) घर और संसार: भवन = घर, भुवन = संसार। क्रम और अर्थ सही हैं।

(B) संसार और घर: दोनों अर्थ उलटे क्रम में हैं, इसलिए गलत।

(C) महल और संसार: भवन का अर्थ घर है, महल विशेष अर्थ है। सामान्य अर्थ में यह सही उत्तर नहीं है।

(D) संसार और महल: क्रम और अर्थ दोनों गलत हैं।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (A) घर और संसार।

11(b). निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **पद**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: शब्द को समझें:

‘पद’ एक बहुअर्थक शब्द है। वाक्य में प्रयोग के अनुसार इसका अर्थ बदल जाता है।

यहाँ शब्द 'पद' के दो अर्थ लिखने हैं।

चरण 2: पहला अर्थ:

पद का पहला अर्थ है पैर या चरण। जैसे: भक्त ने गुरु के पद छुए।

चरण 3: दूसरा अर्थ:

पद का दूसरा अर्थ है ओहदा या पदवी। जैसे: रमेश को बैंक में उच्च पद मिला है।

अंतिम उत्तर:

पद के दो अर्थ: (1) पैर, चरण; (2) ओहदा, पदवी।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **विधि**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: शब्द को समझें:

'विधि' शब्द के कई अर्थ होते हैं। प्रसंग के अनुसार उसका अर्थ तय होता है। यहाँ इसके दो अर्थ लिखने हैं।

चरण 2: पहला अर्थ:

विधि का पहला अर्थ है तरीका या ढंग। जैसे: दवा बनाने की विधि सरल है।

चरण 3: दूसरा अर्थ:

विधि का दूसरा अर्थ है भाग्य या ब्रह्मा। जैसे: विधि का लिखा कोई नहीं टाल सकता।

अंतिम उत्तर:

विधि के दो अर्थ: (1) तरीका, ढंग; (2) भाग्य, ब्रह्मा।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **नीरज**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: शब्द को समझें:

‘नीरज’ शब्द नीर और ज से बना है। नीर का अर्थ जल है और ज का अर्थ उत्पन्न होने वाला है। इस आधार पर पहला अर्थ निकलता है।

चरण 2: पहला अर्थ:

नीरज का पहला अर्थ है कमल, अर्थात् जल में उत्पन्न होने वाला फूल। जैसे: सरोवर में नीरज खिले हैं।

चरण 3: दूसरा अर्थ:

नि: और रज से बने ‘नीरज’ का अर्थ है रज (धूल) से रहित, अर्थात् निर्मल या शुद्ध। जैसे: उसका मन नीरज जल जैसा स्वच्छ है।

अंतिम उत्तर:

नीरज के दो अर्थ: (1) कमल; (2) धूल रहित, निर्मल।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **अंश**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: शब्द को समझें:

‘अंश’ शब्द का प्रयोग सामान्य बोलचाल और गणित, दोनों में होता है। इसलिए इसके दो अलग अर्थ मिलते हैं।

चरण 2: पहला अर्थ:

अंश का पहला अर्थ है भाग या हिस्सा। जैसे: इस कहानी का अंश मुझे बहुत पसंद आया।

चरण 3: दूसरा अर्थ:

अंश का दूसरा अर्थ है भिन्न का ऊपर वाला भाग (numerator), जिसे गणित में हर के ऊपर लिखते हैं। जैसे: भिन्न $3/5$ में 3 अंश है।

अंतिम उत्तर:

अंश के दो अर्थ: (1) भाग, हिस्सा; (2) भिन्न का ऊपरी भाग।

11(c)(i). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही शब्द का चयन करके लिखिए: सौ वर्ष का समय -

- (A) सैकड़ा
- (B) आकड़ा
- (C) शताब्दी
- (D) संवत्

Correct Answer: (C) शताब्दी

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

हमें 'सौ वर्ष का समय' इस वाक्यांश के लिए एक शब्द चुनना है। सौ वर्ष के काल को समय की इकाई के रूप में एक विशेष नाम दिया गया है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) सैकड़ा: सौ वस्तुओं या सौ की संख्या का समूह। इसमें वर्ष या समय का भाव नहीं है, इसलिए गलत।
- (B) आकड़ा: यह मानक शब्द नहीं है। 'आँकड़ा' का अर्थ गिनती के तथ्य (डेटा) होता है, इसलिए गलत।

(C) शताब्दी: शत का अर्थ सौ और अब्द का अर्थ वर्ष है। इसलिए सौ वर्ष की अवधि को शताब्दी कहते हैं। यही सही है।

(D) संवत्: यह किसी राजा या घटना से चलने वाला वर्ष-गणना का कालक्रम है, जैसे विक्रम संवत्। यह सौ वर्ष का समय नहीं है।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (C) शताब्दी

11(c)(ii). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही शब्द का चयन करके लिखिए: अधिक बोलने वाला -

- (A) वाचाल
- (B) वादी
- (C) मिष्टभाषी
- (D) बहुज्ञ

Correct Answer: (A) वाचाल

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

‘अधिक बोलने वाला’ के लिए एक शब्द चुनना है। जो व्यक्ति आवश्यकता से ज्यादा और बिना रुके बोलता है, उसके लिए विशेष शब्द है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

(A) वाचाल: वाचा (वाणी) से बना शब्द है। इसका अर्थ है बहुत बोलने वाला, बातूनी। यही सही है।

(B) वादी: दावा करने वाला या मुकदमा दायर करने वाला व्यक्ति। यह अधिक बोलने वाला नहीं है।

(C) मिष्टभाषी: मीठा बोलने वाला। इसमें मिठास का भाव है, अधिकता का नहीं।

(D) बहुज्ञ: बहुत कुछ जानने वाला। यह ज्ञान की अधिकता बताता है, बोलने की नहीं।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (A) वाचाल

11(d)(i). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: यह अनुदित रचना है।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अशुद्धि की पहचान:

दिया गया वाक्य: यह अनुदित रचना है।

इसमें 'अनुदित' शब्द की वर्तनी गलत है।

चरण 2: शुद्ध रूप और कारण:

अनुवाद किए हुए के लिए सही शब्द 'अनूदित' है, जिसमें 'नू' में दीर्घ 'ऊ' आता है।

'अनुदित' का अर्थ होता है 'जो उदित न हुआ हो', इसलिए यहाँ अर्थ ही बदल जाता है।

अंतिम उत्तर:

शुद्ध वाक्य: यह अनूदित रचना है। (दोष: वर्तनी)

11(d)(ii). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: आपका आशीवाद चाहिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अशुद्धि की पहचान:

दिया गया वाक्य: आपका आशीवाद चाहिए।

इसमें 'आशीर्वाद' शब्द अशुद्ध लिखा गया है।

चरण 2: शुद्ध रूप और कारण:

सही शब्द 'आशीर्वाद' है। यह 'आशीः + वाद' से बना है, इसलिए रेफ (र) 'शी' के बाद आता है, 'आ' के बाद नहीं।

अंतिम उत्तर:

शुद्ध वाक्य: आपका आशीर्वाद चाहिए। (दोष: वर्तनी)



11(d)(iii). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: पक्षी पेड़ में हैं।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अशुद्धि की पहचान:

दिया गया वाक्य: पक्षी पेड़ में हैं।

यहाँ 'में' कारक-चिह्न का गलत प्रयोग हुआ है।

चरण 2: शुद्ध रूप और कारण:

पक्षी पेड़ की डाल या शाखा पर बैठते हैं, पेड़ के भीतर नहीं रहते। जो वस्तु किसी के ऊपर टिकी हो, उसके लिए 'पर' आता है।

'में' भीतर होने का भाव देता है।

अंतिम उत्तर:

शुद्ध वाक्य: पक्षी पेड़ पर हैं। (दोष: कारक/प्रयोग)



11(d)(iv). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: तुम मेरे को पुस्तक दे दो।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अशुद्धि की पहचान:

दिया गया वाक्य: तुम मेरे को पुस्तक दे दो।
इसमें 'मेरे को' बोलचाल का अशुद्ध रूप है।

चरण 2: शुद्ध रूप और कारण:

'मैं' सर्वनाम के साथ 'को' जुड़ने पर शुद्ध रूप 'मुझे' (या 'मुझको') बनता है।
'मेरे को' लिखना व्याकरण की दृष्टि से गलत है।

अंतिम उत्तर:

शुद्ध वाक्य: तुम मुझे पुस्तक दे दो। (दोष: सर्वनाम का रूप)

12(a). 'करुण रस' अथवा 'शृंगार रस' का लक्षण और उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: उत्तर का चयन:

प्रश्न में दो रस दिए हैं। यहाँ पहले रस, करुण रस, का उत्तर दिया गया है।

चरण 2: लक्षण:

प्रिय व्यक्ति के वियोग, मृत्यु या किसी बड़ी हानि से मन में शोक उत्पन्न होता है। जब यही शोक विभाव, अनुभाव और संचारी भावों से पुष्ट होकर रस-रूप में अनुभव होता है, तब करुण रस कहलाता है। इसका स्थायी भाव शोक है।

चरण 3: उदाहरण:

सोक बिकल सब रोवहिं रानी। रूपु सीलु बलु तेजु बखानी॥

करहिं बिलाप अनेक प्रकारा। परहिं भूमितल बारहिं बारा॥

चरण 4: रस की पहचान:

स्थायी भाव: शोक। आलंबन: राजा दशरथ की मृत्यु। उद्दीपन: उनके रूप, शील, बल और तेज का स्मरण। अनुभाव: रोना, विलाप करना, बार-बार भूमि पर गिरना। संचारी भाव: दैन्य, विषाद, स्मृति।

अंतिम उत्तर:

ये पंक्तियाँ रामचरितमानस की हैं और इनमें करुण रस है।

12(b). 'भ्रान्तिमान' अलंकार अथवा 'अनुप्रास' अलंकार का लक्षण और उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: चुना गया अलंकार:

इस उत्तर में पहले दिए गए अलंकार, भ्रान्तिमान, को समझाया गया है।

चरण 2: लक्षण:

जहाँ रूप, रंग या गुण की समानता के कारण एक वस्तु को दूसरी वस्तु समझ लेने का भ्रम हो और उसी भ्रम के अनुसार क्रिया भी हो जाए, वहाँ भ्रान्तिमान अलंकार होता है। यह अर्थालंकार है। इसमें भ्रम सच्चा होता है, कवि की कल्पना मात्र नहीं।

चरण 3: उदाहरण:

नाक का मोती अधर की कान्ति से,
बीज दाढ़िम का समझकर भ्रान्ति से।
देखकर सहसा हुआ शुक मौन है,
सोचता है अन्य यह वह कौन है॥

चरण 4: उदाहरण की व्याख्या:

नाक में पहना मोती होंठों की लाली से लाल-सा दिखता है। तोता उसे अनार का बीज समझ बैठता है और ठिठककर चुप हो जाता है। यहाँ मोती (उपमेय) में अनार के बीज (उपमान) का भ्रम हुआ और तोते ने उसी के अनुसार व्यवहार किया।

अंतिम उत्तर:

यह भ्रान्तिमान अलंकार का उदाहरण है।

12(c). 'दोहा' छन्द अथवा 'कुंडलिया' छन्द का लक्षण और एक उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

प्रश्न में दोहा अथवा कुंडलिया में से एक छन्द का लक्षण और उदाहरण माँगा गया है। इस उत्तर में पहला छन्द 'दोहा' लिखा गया है।

चरण 2: लक्षण:

दोहा अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इसमें दो पंक्तियाँ और चार चरण होते हैं। पहले और तीसरे (विषम) चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं और दूसरे तथा चौथे (सम) चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। कुल 48 मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अंत में गुरु और लघु (S I) आता है।

चरण 3: उदाहरण:

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ परि जाय॥

चरण 4: जाँच:

पहली पंक्ति में 'रहिमन धागा प्रेम का' में 13 मात्राएँ और 'मत तोड़ो चटकाय' में 11 मात्राएँ हैं। दूसरी पंक्ति में भी 13 और 11 मात्राएँ हैं। सम चरणों के अंत में 'काय' और

'जाय' गुरु-लघु हैं।

अंतिम उत्तर:

दोहा 13 और 11 मात्राओं के क्रम वाला अर्द्धसम मात्रिक छन्द है।



13. बैंक के शाखा-प्रबन्धक को स्वरोजगार हेतु ऋण की माँग करते हुए आवेदन-पत्र लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

यह एक औपचारिक आवेदन-पत्र है। इसे बैंक के शाखा-प्रबन्धक को लिखना है और स्वरोजगार शुरू करने के लिए ऋण माँगना है। पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्रबन्धक का पद, विषय, संबोधन, तीन छोटे अनुच्छेद, स्वनिर्देश और नाम अवश्य होने चाहिए।

चरण 2: पत्र:

प्रेषक:

क ख ग

25, गाँधी नगर,

लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

दिनांक: 12 मार्च, 2026

सेवा में,

शाखा-प्रबन्धक महोदय,

भारतीय स्टेट बैंक,

गाँधी नगर शाखा, लखनऊ।

विषय: स्वरोजगार हेतु ऋण प्रदान करने के संबंध में।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि मैं इस नगर का स्थायी निवासी हूँ और स्नातक तक शिक्षा प्राप्त कर चुका हूँ। नौकरी न मिलने के कारण मैं अपना स्वयं का काम शुरू करना चाहता हूँ।

मैं कम्प्यूटर और मोबाइल की मरम्मत की एक छोटी दुकान खोलना चाहता हूँ। इसके लिए मुझे उपकरण, सामान और दुकान के किराये के लिए लगभग तीन लाख रुपये की आवश्यकता है। मेरे पास इतनी पूँजी नहीं है।

अतः आपसे प्रार्थना है कि मुझे सरकारी योजना के अंतर्गत यह ऋण स्वीकृत करने की कृपा करें। मैं आवश्यक कागजात और जमानत देने को तैयार हूँ। ऋण की किश्तें मैं समय से चुका दूँगा।

भवदीय,

क ख ग

मोबाइल: 90000 00000

चरण 3: ध्यान रखने योग्य बातें:

पत्र की भाषा विनम्र और सरल रखें। ऋण का उद्देश्य, राशि और चुकाने का आश्वासन स्पष्ट लिखें।

निष्कर्ष:

ऊपर औपचारिक आवेदन-पत्र का पूरा प्रारूप दिया गया है।

OR

अपने मुहल्ले की समुचित सफाई हेतु नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

यह औपचारिक पत्र है जो नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को लिखा जाना है। पत्र में मुहल्ले की गंदगी की समस्या बतानी है और सफाई की व्यवस्था करने की माँग करनी है।

चरण 2: पत्र:

प्रेषक:

क ख ग

18, शास्त्री नगर,

वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

दिनांक: 20 फरवरी, 2026

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी महोदय,

नगर निगम,

वाराणसी।

विषय: मुहल्ले की समुचित सफाई कराने हेतु प्रार्थना-पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं शास्त्री नगर मुहल्ले का निवासी हूँ। हमारे मुहल्ले में पिछले एक माह से सफाई कर्मचारी नियमित रूप से नहीं आ रहे हैं।

नालियाँ कूड़े से भरी हैं और उनका गंदा पानी सड़कों पर बह रहा है। जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे हैं, जिनसे बदबू फैल रही है। मच्छरों और मक्खियों के कारण मलेरिया, डेंगू और पेट के रोग फैलने का भय है।

अतः आपसे प्रार्थना है कि मुहल्ले में प्रतिदिन झाड़ू लगवाने, नालियों की सफाई कराने और कूड़ा उठवाने की व्यवस्था करें। साथ ही मच्छर मारने की दवा का छिड़काव भी करवाएँ। इससे आपकी बड़ी कृपा होगी।

भवदीय,

क ख ग

निवासी, शास्त्री नगर, वाराणसी

चरण 3: ध्यान रखने योग्य बातें:

समस्या का वर्णन तथ्यों के साथ करें। भाषा शिष्ट रखें और अंत में समाधान की स्पष्ट माँग लिखें।

निष्कर्ष:

ऊपर स्वास्थ्य अधिकारी के नाम सफाई हेतु पूरा पत्र दिया गया है।



14. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:
व्यावसायिक शिक्षा के विविध आयाम

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. व्यावसायिक शिक्षा का अर्थ
3. व्यावसायिक शिक्षा के विविध आयाम
4. सरकारी प्रयास
5. लाभ
6. समस्याएँ और सुझाव
7. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध:

प्रस्तावना: शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकी ज्ञान देना नहीं, मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाना भी है। हमारे देश में लंबे समय तक डिग्री को ही सफलता की कुंजी माना गया। इसका परिणाम यह हुआ कि शिक्षित बेरोजगारों की संख्या बढ़ती गई। इसी समस्या के समाधान के रूप में आज व्यावसायिक शिक्षा का महत्व बढ़ रहा है।

व्यावसायिक शिक्षा का अर्थ: जो शिक्षा विद्यार्थी को किसी विशेष कार्य, कौशल या

व्यवसाय के लिए तैयार करे, वह व्यावसायिक शिक्षा कहलाती है। इसमें सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ हाथ से काम सीखने और प्रायोगिक प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया जाता है।

विविध आयाम: व्यावसायिक शिक्षा का क्षेत्र बहुत व्यापक है। कृषि के क्षेत्र में खेती की आधुनिक तकनीक, पशुपालन, डेयरी, मत्स्य पालन और बागवानी का प्रशिक्षण दिया जाता है। तकनीकी क्षेत्र में आई.टी.आई. और पॉलिटेक्निक संस्थान इलेक्ट्रीशियन, फिटर, वेल्डर और मैकेनिक जैसे कुशल कारीगर तैयार करते हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में नर्सिंग, फार्मसी और पैरामेडिकल पाठ्यक्रम हैं। वाणिज्य और सेवा क्षेत्र में लेखा, बैंकिंग, कंप्यूटर, पर्यटन और होटल प्रबंधन की शिक्षा मिलती है। कला के क्षेत्र में फैशन डिजाइन, फोटोग्राफी, संगीत और हस्तशिल्प भी रोजगार के अच्छे साधन बन गए हैं।

सरकारी प्रयास: कौशल भारत अभियान और प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना का उद्देश्य युवाओं को हुनर सिखाकर रोजगार से जोड़ना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यालयी स्तर से ही व्यावसायिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का अंग बनाने की बात कही गई है।

लाभ: इससे युवा आत्मनिर्भर बनते हैं, बेरोजगारी घटती है, उद्योगों को कुशल श्रमिक मिलते हैं और श्रम के प्रति सम्मान का भाव जागता है।

समस्याएँ और सुझाव: अच्छे प्रशिक्षकों, आधुनिक उपकरणों और उद्योगों से जुड़ाव की कमी बड़ी बाधा है। समाज में आज भी नौकरी को हुनर से ऊँचा समझा जाता है। इसके लिए प्रशिक्षण संस्थानों को उद्योगों से जोड़ना, आधुनिक साधन जुटाना और लोगों की सोच बदलना आवश्यक है।

उपसंहार: देश की प्रगति के लिए शिक्षित ही नहीं, कुशल नागरिकों की भी आवश्यकता है। यदि व्यावसायिक शिक्षा को सही दिशा और सम्मान मिले, तो यह भारत को आत्मनिर्भर बनाने में सबसे बड़ा सहारा सिद्ध होगी।

निष्कर्ष:

व्यावसायिक शिक्षा युवाओं को हुनर, रोजगार और आत्मविश्वास देने वाली शिक्षा है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:
वर्तमान युवा : दशा और दिशा

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. युवा शक्ति का महत्व
3. वर्तमान युवा की दशा
4. युवाओं की उपलब्धियाँ
5. सही दिशा के उपाय
6. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध:

प्रस्तावना: किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके युवाओं के हाथ में होता है। युवा वह धारा है, जिसमें उत्साह, साहस और परिवर्तन की शक्ति होती है। भारत सबसे अधिक युवा आबादी वाले देशों में गिना जाता है, इसलिए आज के युवा की दशा और दिशा हमारे लिए विशेष चिंता और आशा का विषय है।

युवा शक्ति का महत्व: इतिहास साक्षी है कि स्वतंत्रता आंदोलन में भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद और खुदीराम बोस जैसे युवाओं ने प्राण न्योछावर किए। स्वामी विवेकानन्द ने भी युवाओं को जगाते हुए कहा था कि उठो, जागो और लक्ष्य की प्राप्ति तक मत रुको।

वर्तमान युवा की दशा: आज का युवा अनेक उलझनों से घिरा है। शिक्षित होकर भी उसे रोजगार का अभाव सताता है। मोबाइल और सोशल मीडिया की लत ने उसका समय और एकाग्रता छीन ली है। कुछ युवा नशे की ओर बढ़ रहे हैं। पश्चिमी चकाचौंध के अंधानुकरण से उनका अपनी भाषा, संस्कृति और संस्कारों से नाता कमजोर हो रहा है। प्रतियोगिता के दबाव से तनाव और निराशा भी बढ़ी है। कुछ स्वार्थी लोग उन्हें भड़काकर हिंसा और आंदोलन की राह पर भी धकेल देते हैं।

युवाओं की उपलब्धियाँ: तस्वीर का दूसरा पहलू भी उजला है। आज का युवा विज्ञान, अंतरिक्ष अनुसंधान, खेल, सूचना तकनीक और स्टार्टअप के क्षेत्र में देश का

नाम रोशन कर रहा है। वह जागरूक है और समाज की बुराइयों पर प्रश्न उठाने का साहस रखता है।

सही दिशा के उपाय: युवाओं को सही दिशा देने के लिए शिक्षा को चरित्र-निर्माण और कौशल विकास से जोड़ना होगा। माता-पिता और शिक्षक मित्र की तरह उनकी बात सुनें। खेल, योग और सेवा कार्यों में उनकी भागीदारी बढ़ाई जाए। सरकार रोजगार के अवसर बनाए और युवा स्वयं समय का सदुपयोग, अनुशासन और राष्ट्रप्रेम का संकल्प लें।

उपसंहार: युवा यदि दिशाहीन हुआ तो राष्ट्र की शक्ति व्यर्थ हो जाएगी, और यदि उसे सही राह मिली तो वही राष्ट्र का भाग्य बदल देगा। आवश्यकता है कि वह अपनी ऊर्जा को रचनात्मक कार्यों में लगाए।

निष्कर्ष:

जागरूक, संस्कारवान और कुशल युवा ही उज्ज्वल भारत की नींव है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए: **वसुधैव कुटुम्बकम्**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. वसुधैव कुटुम्बकम् का अर्थ और स्रोत
3. भारतीय संस्कृति में यह भावना
4. वर्तमान युग में प्रासंगिकता
5. इस भावना के मार्ग की बाधाएँ
6. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध:

प्रस्तावना: भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता उसकी उदारता और विश्व-

बंधुत्व की भावना है। हमारे ऋषियों ने केवल अपने देश या समाज के सुख की कामना नहीं की, बल्कि सारे संसार के कल्याण की प्रार्थना की। इसी उदात्त भावना को वसुधैव कुटुम्बकम् कहा गया है।

अर्थ और स्रोत: इसका अर्थ है कि सारी पृथ्वी ही एक परिवार है। यह उक्ति महोपनिषद् और हितोपदेश में मिलती है: अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥ अर्थात् यह अपना है और यह पराया है, ऐसा विचार छोटे मन वालों का होता है। उदार हृदय वालों के लिए तो सारी पृथ्वी ही परिवार है।

भारतीय संस्कृति में यह भावना: हमारे यहाँ सर्वे भवन्तु सुखिनः की प्रार्थना की जाती है। अतिथि को देवता माना जाता है। भारत ने शक, हूण, पारसी और अनेक जातियों को शरण दी और उन्हें अपने समाज में घुला-मिला लिया। महात्मा बुद्ध की करुणा, गांधीजी की अहिंसा और स्वामी विवेकानन्द का शिकागो का सम्बोधन इसी भावना के उदाहरण हैं।

वर्तमान युग में प्रासंगिकता: आज विज्ञान और संचार साधनों ने दुनिया को बहुत छोटा कर दिया है। एक देश की आर्थिक मंदी, महामारी या जलवायु संकट का असर सब पर पड़ता है। कोरोना काल में भारत ने अनेक देशों को दवाइयाँ और टीके पहुँचाए। भारत की अध्यक्षता में हुए जी-20 सम्मेलन का विषय भी वसुधैव कुटुम्बकम् : एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य रखा गया। परमाणु हथियारों की होड़ और आतंकवाद के खतरे के बीच शांति का मार्ग यही भावना दिखाती है।

बाधाएँ: स्वार्थ, संकीर्ण राष्ट्रवाद, धर्म और जाति के भेद, आतंकवाद तथा शक्तिशाली देशों की विस्तारवादी नीति इस भावना के मार्ग की बड़ी रुकावटें हैं।

उपसंहार: यदि हम अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर दूसरों के सुख-दुख को अपना समझें, तो युद्ध, घृणा और शोषण समाप्त हो सकते हैं। विश्व शांति का सच्चा आधार वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना ही है।

निष्कर्ष:

सारा संसार एक परिवार है, इस भाव को अपनाने से ही मानवता सुरक्षित रहेगी।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:
प्राकृतिक आपदाएँ और उनका प्रबन्धन

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: निबन्ध की रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. प्राकृतिक आपदाओं के प्रकार
3. आपदाओं के कारण
4. आपदाओं से होने वाली हानि
5. आपदा प्रबन्धन के उपाय
6. भारत में आपदा प्रबन्धन की व्यवस्था
7. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध:

प्रस्तावना

प्रकृति मनुष्य की माँ है, पर कभी-कभी यही माँ रौद्र रूप धारण कर लेती है। भूकम्प, बाढ़, सूखा, चक्रवात और भूस्खलन जैसी घटनाएँ जब जन-जीवन को तहस-नहस कर देती हैं, तब उन्हें प्राकृतिक आपदा कहा जाता है। इन पर मनुष्य का पूरा नियन्त्रण नहीं है, किन्तु सही तैयारी से हानि को बहुत कम किया जा सकता है। यही आपदा प्रबन्धन का उद्देश्य है।

प्राकृतिक आपदाओं के प्रकार

मुख्य आपदाएँ हैं: भूकम्प, बाढ़, सूखा, चक्रवात, सुनामी, भूस्खलन, हिमस्खलन, ज्वालामुखी विस्फोट और बादल फटना। भारत की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि यहाँ लगभग सभी प्रकार की आपदाएँ आती रहती हैं। हिमालयी क्षेत्र भूकम्प और भूस्खलन के लिए, तटीय क्षेत्र चक्रवात के लिए और गंगा-ब्रह्मपुत्र के मैदान बाढ़ के लिए संवेदनशील हैं।

आपदाओं के कारण

कुछ कारण प्राकृतिक हैं, जैसे पृथ्वी की भीतरी प्लेटों का खिसकना और मौसम में बदलाव। किन्तु मनुष्य भी बड़ा जिम्मेदार है। वनों की अन्धाधुन्ध कटाई, पहाड़ों पर

अनियोजित निर्माण, नदियों के किनारे बसी बस्तियाँ, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन से खतरा बढ़ गया है। पेड़ कटने से मिट्टी ढीली होती है और भूस्खलन तथा बाढ़ बढ़ती हैं।

आपदाओं से होने वाली हानि

आपदा के समय हजारों लोगों की जान जाती है। घर, खेत, सड़कें और पुल नष्ट हो जाते हैं। पशुधन और फसलें बर्बाद होती हैं, बीमारियाँ फैलती हैं और लोग बेघर हो जाते हैं। अर्थव्यवस्था पर भारी बोझ पड़ता है तथा बच्चों की पढ़ाई और लोगों की रोजी-रोटी वर्षों तक प्रभावित रहती है।

आपदा प्रबन्धन के उपाय

आपदा प्रबन्धन के तीन चरण हैं: आपदा से पहले, आपदा के समय और आपदा के बाद। पहले चरण में पूर्व चेतावनी प्रणाली, मौसम विभाग की सूचनाएँ, भूकम्प-रोधी भवन, तटबन्ध और वृक्षारोपण जरूरी हैं। लोगों को अभ्यास और प्रशिक्षण द्वारा जागरूक करना चाहिए। आपदा के समय तुरन्त बचाव, प्राथमिक चिकित्सा, भोजन, पानी और सुरक्षित आश्रय देना आवश्यक है। आपदा के बाद पुनर्वास, मकानों का निर्माण, मुआवजा और मानसिक सहारा देना चाहिए।

भारत में आपदा प्रबन्धन की व्यवस्था

भारत सरकार ने आपदा प्रबन्धन अधिनियम, 2005 बनाया। इसके अन्तर्गत राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण तथा राज्यों में राज्य प्राधिकरण गठित हुए हैं। राष्ट्रीय आपदा मोचन बल प्रशिक्षित जवानों के साथ बाढ़, भूकम्प जैसी घटनाओं में देवदूत बनकर पहुँचता है। सेना, स्वयंसेवी संस्थाएँ और आम नागरिक भी सहायता करते हैं।

उपसंहार

प्राकृतिक आपदाओं को रोका नहीं जा सकता, पर उनके प्रभाव को घटाया जा सकता है। पर्यावरण की रक्षा, नियोजित निर्माण, सजग शासन और जागरूक नागरिक मिलकर ही सुरक्षित समाज बना सकते हैं। यदि हम प्रकृति का सम्मान करें और पहले से तैयार रहें, तो आपदा का सामना साहस से किया जा सकता है।

निष्कर्ष:

निबन्ध का विषय: प्राकृतिक आपदाएँ और उनका प्रबन्धन। पूर्व तैयारी, त्वरित बचाव और उचित पुनर्वास ही आपदा प्रबन्धन की कुंजी हैं।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:
पुस्तकालय का महत्व

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: निबन्ध की रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. पुस्तकालय का अर्थ
3. पुस्तकालय के प्रकार
4. पुस्तकालय के लाभ
5. डिजिटल पुस्तकालय
6. वर्तमान दशा और सुझाव
7. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध:

प्रस्तावना

पुस्तकें ज्ञान का भण्डार हैं और पुस्तकालय उस भण्डार का द्वार। हर व्यक्ति के लिए सब पुस्तकें खरीदना सम्भव नहीं होता। ऐसे में पुस्तकालय सबको कम खर्च में या निःशुल्क अच्छी पुस्तकें उपलब्ध कराता है। इसीलिए पुस्तकालय को समाज का ज्ञान-मन्दिर कहा जाता है।

पुस्तकालय का अर्थ

पुस्तकालय का अर्थ है पुस्तकों का घर, अर्थात् वह स्थान जहाँ विभिन्न विषयों की पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ और समाचार-पत्र व्यवस्थित ढंग से रखे जाते हैं। यहाँ शान्त वातावरण होता है, जिसमें बैठकर पाठक एकाग्रता से अध्ययन कर सकते हैं।

पुस्तकालय के प्रकार

पुस्तकालय कई प्रकार के होते हैं: विद्यालय और महाविद्यालय के पुस्तकालय, सार्वजनिक पुस्तकालय, निजी पुस्तकालय, चलते-फिरते पुस्तकालय और राष्ट्रीय पुस्तकालय। कोलकाता का राष्ट्रीय पुस्तकालय हमारे देश का प्रमुख पुस्तकालय है। प्राचीन काल में नालन्दा का पुस्तकालय भी विश्व-प्रसिद्ध था।

पुस्तकालय के लाभ

पुस्तकालय से अनेक लाभ हैं। पहला, विद्यार्थी पाठ्य-पुस्तकों के साथ सन्दर्भ-ग्रन्थ और दुर्लभ पुस्तकें पढ़ पाते हैं। दूसरा, निर्धन विद्यार्थी को महँगी पुस्तकें मुफ्त मिल जाती हैं। तीसरा, समाचार-पत्र और पत्रिकाओं से देश-दुनिया की जानकारी मिलती है। चौथा, पढ़ने की आदत बनती है, जिससे भाषा, विचार और कल्पना-शक्ति निखरती है। पाँचवाँ, खाली समय का सदुपयोग होता है और मन बुरी संगति से बचा रहता है।

डिजिटल पुस्तकालय

आज कम्प्यूटर और इण्टरनेट के युग में डिजिटल पुस्तकालय भी बन गए हैं। इनमें ई-पुस्तकें और शोध-पत्र घर बैठे पढ़े जा सकते हैं। फिर भी पुस्तकों को हाथ में लेकर पढ़ने का जो सुख और शान्ति है, वह पुस्तकालय में ही मिलती है।

वर्तमान दशा और सुझाव

दुःख की बात है कि अनेक स्थानों पर पुस्तकालयों में नई पुस्तकों का अभाव है, बैठने की जगह कम है और कर्मचारी उदासीन हैं। सरकार को पर्याप्त धन देना चाहिए। हर गाँव और मोहल्ले में पुस्तकालय खुलना चाहिए। समय-सारणी लचीली हो और पाठकों के सुझावों पर नई पुस्तकें मँगाई जाएँ। हमें भी पुस्तकों को साफ रखना और समय से लौटाना चाहिए।

उपसंहार

पुस्तकालय समाज को शिक्षित, विचारशील और जागरूक बनाते हैं। जिस देश में पुस्तकालय समृद्ध होते हैं, वहाँ के नागरिक भी समृद्ध विचारों वाले होते हैं। हमें चाहिए कि हम पुस्तकालय जाने की आदत डालें और उसका पूरा लाभ उठाएँ।

निष्कर्ष:

निबन्ध का विषय: पुस्तकालय का महत्त्व। पुस्तकालय ज्ञान, चरित्र और जागरूकता के विकास का सबसे सुलभ साधन है।